اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۙ يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۬

अल्लाह उन लोगों का मित्र है जो ईमान लाते हैं। वह उन्हें अन्धेरों से निकाल कर प्रकाश की ओर लाता है। (अल् बक़रः -258)

मासिक पत्रिका

राह-ए-ईमान

क़ादियान

हिजरत 1394 (हिजरी शम्सी) मई 2015 ई०

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَ اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ

निस्सन्देह हम ने ही यह ज़िक्र (पवित्र क़ुर्आन) उतारा है और निस्सन्देह हम ही इस की सुरक्षा करने वाले हैं।

(सूरः अलहिज्र : 10)

मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत की विभिन्न शाखाओं द्वारा तालीम तथा तरबियत से संबंधी गतिविधियों के विभिन्न दृश्य।

दिनांक 12 अप्रैल 2015 को आयोजित मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया चण्डीगढ़ के प्रथम इज्तिमा का दृश्य

दिनांक 5 अप्रैल 2015 को हांसी ज़िला हिसार हरियाणा में आयोजित मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया ज़िला हिसार के इज्तिमा का दृश्य

मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया क़ादियान (हलक़ा मुबारक) द्वारा स्वास्थ्य सुरक्षा पर आयोजित जलसे का एक दृश्य

मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया मैंगलोर द्वारा तब्लीग़ में व्यस्त ख़ुद्दाम लीफलेट वितरित करते हुए।

दरवेशान-ए-क़ादियान एवं सदर मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत के साथ एक यादगारी तस्वीर
मज्लिस अतफ़ालुल अहमदिया केरल के सदस्यों का तरबियती टूर क़ादियान अप्रैल 2015 ई. के अवसर पर एक दृश्य

بسم الله الرحمن الرحيم

لا اله الا الله محمد رسول الله

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं।

Vol -17
Issue - 5

राह-ए-ईमान

मई
2015

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

सम्पादक
शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री
****
उप-सम्पादक
नवीद अहमद फ़ज़्ल
मुहम्मद फ़ारूक सैफी
टाइप सेटिंग
सय्यद एजाज़ अहमद
टाइटल डिज़ाइन
तस्नीम अहमद बट्ट
कार्यालय प्रभार
सय्यद रशीद अहमद शमीम,
मुहम्मद असलम
मैनेजर
जुबैर अहमद ताहिर

विषय सूची

पृ.

1. पवित्र क़ुर्आन 2
2. हदीस शरीफ़ 4
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृत वाणी 5
4. सम्पादकीय 6
5. ख़ुत्बः जुम्अः 30 मई 2014 ई. 8
6. हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पवित्र जीवन (भाग-20) 16
7. जमाअत अहमदिया का परिचय 22
8. अहमदिया सम्प्रदाय भारतवासियों की दृष्टि में (भाग-6) 25
9. हज़रत मुस्लेह मौऊद का बचपन 28
10. पानी उबाल कर पीएँ 30
11. तहरीक-ए-जदीद की दूसरी छमाही 31
12. पुस्तक परिचय 32

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिय्या भारत,
क़ादियान - 143516, ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**

लेखकों के विचार से अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य : 150 रुपये

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Rah-e-Imaan, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab iNDIA. Editor SK. Mujahid Ahmad

पवित्र क़ुरआन

क़ादियान में एक बार एक व्यक्ति आया और उसने कहा कि निस्सन्देह मिर्ज़ा साहिब को इल्हाम (ईशवाणी) होता है कि तुझे हमने बहुत महान बनाया है। परन्तु मुझे भी ख़ुदा तआला प्रतिदिन कहता है कि तू मूसा है तू मुहम्मद है, तू ईसा है। लोगों ने उसे बहुत समझाया परन्तु वह न माना। अंतत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को किसी ने उसके बारे में बता दिया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कहा उसे मेरे पास ले आओ या आप ने कहा उस से प्रश्न करो (मुझे इस समय अच्छी तरह याद नहीं) कि जब ख़ुदा तुम से कहता है कि तुम ईसा हो तो क्या ईसा की तरह तुम्हें खुल्के तैर (पक्षियों को बनाने की शक्ति) का निशान भी तुम्हें मिलता है या तुम्हारे हाथ से भी उसी तरह मृतक जीवित होते हैं जिस तरह ईसा के हाथ से जीवित होते थे या जब ख़ुदा तुम्हें मूसा कहता है तो क्या मूसा की तरह यदे व्यज़ा (सफेद हाथ) का निशान भी तुम्हें दिया जाता है या जब तुम्हें मुहम्मद कहा जाता है तो क्या मुहम्मद स.अ.व. का वह उच्च महान स्थान जो دَنَا فَتَدَلّٰى فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى में वर्णित किया गया है वह भी तुम्हें मिलता है या तुम्हें वही फसाहत व बलाग़त भी दी जाती है जो मुहम्मद स.अ.व. को दी गई? वह कहने लगा मिलता तो कुछ नहीं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कहा फिर वह ख़ुदा नहीं बल्कि शैतान है जो तुम्हें प्रतिदिन ईसा और मूसा और मुहम्मद कहता है अगर ख़ुदा तुम्हें यह स्थान अता करता तो तुम्हें वह पुरस्कार भी मिलते।

इसी तरह दूसरा व्यक्ति भी देख सकता है कि उसका सीना चीरा गया और दिल धोकर पुन: उसके वास्तविक स्थान पर रख दिया गया परन्तु अंतर यह होगा कि उसका सीना फिर भी विस्तृत न होगा तंग ही रहेगा। परन्तु जिसका दिल ख़ुदा धोकर सीने में रखेगा उसका सीना पहले से हज़ारों गुना अधिक विस्तृत हो जाएगा। अत: हज़रत मुहम्मद स.अ.व. के रज़ाई भाई (एक ही औरत का दूध पीने वाले) ने जो गवाही दी है अगर वह बात झूठी होती तो प्रश्न उठता है कि आपका सीना किस तरह विस्तृत हुआ? फिर तो चाहिए था कि आपका सीना विस्तृत न होता परन्तु हम देखते हैं कि उधर आपका सीना चीर कर दिल धोया गया और इधर संसार ने देख लिया कि प्रत्येक ज्ञान के बारे में आप स.अ.व. ने शिक्षा दी जिनका उदाहरण और किसी व्यक्ति में नहीं मिलता शिक्षा की कोई ऐसी शाखा नहीं जिसमें क़ुरआन की शिक्षा का पक्ष लेकर आपने उच्च व महान शिक्षा पेश न की हो। जब हम उन घटनाओं को देखते हैं तो हमें स्वीकार करना पड़ता है कि आपका सीना चीरने वाला फरिश्ता ही था नहीं तो खाली दिल धोकर सीने के भीतर रख देने में क्या चमत्कार हो सकता था। बात तो वही रही पहले भी दिल में खून आता था और

उसके बाद भी दिल में खून ने ही आना था जो वस्तु इस घटना को प्रतिष्ठा देती है वह इसका शारीरिक नहीं बल्कि आध्यात्मिक पक्ष है इसी तरफ संकेत करते हुए फर्माया 'अलम नश्रह्लका सद्रका' क्या हम ने तेरे लिए तेरे सीने को खोल नहीं दिया। क्या बचपन में ही यह दृश्य हम ने तुझे नहीं दिखा दिया था और हम ने बचपन में ही तुझे यह नहीं कह दिया था कि हम एक दिन तुझ में बड़े-बड़े कमालात पैदा करेंगे? यह उस कश्फी घटना की वास्तविकता है और जिस ने बाद में आपकी सच्चाई को प्रकाशमय सूर्य की तरह प्रकट कर दिया वरना हम यह मानने के लिए तैयार नहीं थे कि (नऊज़ुबिल्लाह) आपके दिल पर स्याही थी जिसे फरिश्तों ने धो दिया। आपका दिल पहले भी पवित्र था उसको धोने का अर्थ यह था कि हमने नई पूर्णताएँ और ज्ञान के नए विस्तार तेरे भीतर पैदा कर दिए हैं यह अर्थ नहीं था कि आप के दिल पर (अल्लाह क्षमा करे) कोई अपवित्रता लगी हुई थी जिसे उन्होंने धो दिया।

(तफसीर-ए-कबीर, भाग 9, पृ. 135)

औसाफ़े कुरआन मजीद

नूरे फ़ुर्क़ा है जो सब नूरों से अजला निकला
पाक वो जिस से ये अनवार का दरिया निकला

हक की तौहीद का मुरझा ही चला था पौधा
नागिहाँ ग़ैब से ये चश्माए अस्फ़ा निकला

या इलाही तेरा फ़ुर्क़ाँ है कि इक आलम है
जो ज़रूरी था वो सब इस में मुहय्या निकला

सब जहाँ छान चुके सारी दुकानें देखीं
मय इरफाँ का यही एक ही शीशा निकला

किस से उस नूर की मुमकिन हो जहाँ में तश्बीह
वो तो हर बात में हर वस्फ़ में यक्ता निकला

पहले समझे थे कि मूसा का असा है फ़ुर्क़ाँ
फिर जो सोचा तो हर लफ़्ज़ मसीहा निकला

है कुसूर अपना ही अन्धों का वगरना वो नूर
ऐसा चमका है कि सद नय्यरे बैयज़ा निकला

ज़िन्दगी ऐसो की क्या ख़ाक है इस दुनिया में
जिनका इस नूर के होते भी दिल अ'मा निकला

जलने से आगे ही ये लोग तो जल जाते हैं
जिनकी हर बात फकत झूठ का पुतला निकला

(बराहीन अहमदिया, भाग 3, पृ. 274, प्रकाशन 1882, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 1 पृ. 305)

हदीस शरीफ़

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कथन

हज़रत अबू हुरैरा[रज़ि.] रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने फ़रमाया आपस में ईर्ष्या न करो। आपस में न झगड़ो। आपस में द्वेष न रखो। और एक दूसरे से दुश्मनियाँ न रखो और तुम में से कोई एक दूसरे के सौदे पर सौदा न करे। हे अल्लाह के बन्दो ! आपस में भाई-भाई बन जाओ मुसलमान मुसलमान का भाई है। वह अपने भाई पर ज़ुल्म नहीं करता, उसे अपमानित नहीं करता और उसे तुच्छ नहीं समझता। फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने अपने सीने की तरफ़ इशारा करते हुए तीन बार फ़रमाया : "अत्तक़्वा हाहुना"

अर्थात तक़्वा (संयम) यहाँ है। किसी आदमी की बुराई के लिए इतना काफ़ी है कि वह अपने मुसलमान भाई को तुच्छ जाने, प्रत्येक मुसलमान पर दूसरे मुसलमान का ख़ून, माल और इज़्ज़त हराम है।

(सही: मुस्लिम किताबुल बिर्रे वस्सिलह बाब तहरीम ज़ुल्मुल मुस्लिमे व ख़ज़्लहू..)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो वर्णन करते हैं कि एक बार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने फ़रमाया : अल्लाह तआला फ़रमाता है - जिसने मेरे दोस्त से दुश्मनी की मैं उससे लड़ाई का ऐलान करता हूँ। मेरा बन्दा मेरी निकटता जितना उस चीज़ से जो मुझे पसन्द है और जिसे मैंने उस पर फ़र्ज़ कर दिया है, हासिल कर सकता है। उतना किसी और चीज़ से हासिल नहीं कर सकता और नवाफ़िल के द्वारा से मेरा बन्दा मेरे निकट हो जाता है। यहाँ तक कि मैं उससे मुहब्बत करने लग जाता हूँ और जब मैं उसको अपना दोस्त बना लेता हूँ तो उसके कान बन जाता हूँ जिससे वह सुनता है, उसकी आँखें बन जाता हूँ जिनसे वह देखता है उसके हाथ बन जाता हूँ जिनसे वह पकड़ता है, उसके पाँव बन जाता हूँ जिनसे वह चलता है, अर्थात् मैं ही उसका कारसाज़ (कार्य संवारने वाला) होता हूँ, अगर वह मुझसे मांगता है तो मैं उसको देता हूँ और अगर वह मुझसे शरण चाहता है तो मैं उसे पनाह देता हूँ। (सही: बुख़ारी किताबुर्रिक़ाक़, बाब तवाज़अ)

हे लोगो एक दूसरे को सलाम करने का चलन जारी करो। मुहताज व निर्धन को भोजन कराओ। रिश्तेदारों से मेल-मिलाप रखो और उस समय नमाज़ पढ़ो जब लोग सोए हुए हों। यदि तुम ऐसा करोगे तो बड़ी शान्ति के साथ स्वर्ग में प्रवेश करोगे। (तिरमज़ी शरीफ़)

***

*

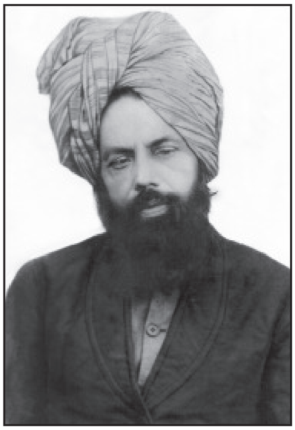

रूहानी ख़ज़ाइन

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

मेरे आने का उद्देश्य

जमाअत अहमदिया के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़र्माते हैं कि :-

(1) मुझे ख़ुदा तआला ने इस्लाम की सुरक्षा के लिए भेजा है ताकि मैं इस कलयुग में क़ुर्आन की अच्छाईयों और हज़रत मुहम्मद स.अ.व. की प्रतिष्ठा को प्रकट करूँ। (बरकातुद्दुआ, पृ. 34)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फर्माते हैं कि :-

(2) यह विनीत तो केवल इसलिए भेजा गया है ता कि यह सन्देश लोगों तक पहुँचा दे कि संसार के सम्पूर्ण धर्मों में से वह धर्म सत्य और ख़ुदा तआला की इच्छा अनुसार है जिसे पवित्र क़ुर्आन ले कर आया है (अर्थात इस्लाम) और मुक्ति के घर में प्रवेश करने का द्वार (दरवाज़ा) ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह है। (हुज्जतुल इस्लाम पृ. 12)

(3) हे सम्पूर्ण मानवजाति जो धरती पर रहती हो और हे सारी मानवीय आत्माओ! जो पूर्व व पश्चिम में रहती हैं मैं पूरे जोश के साथ तुम्हें इस तरफ निमंत्रण देता हूँ कि अब धरती पर सच्चा धर्म केवल इस्लाम है और सच्चा ख़ुदा भी वही ख़ुदा है जिसका वर्णन क़ुर्आन में किया गया है और हमेशा की रूहानी ज़िन्दगी (आध्यात्मिक जीवन) वाला नबी और प्रताप व प्रतिष्ठा के सिंहासन पर बैठने वाला (नबी) हज़रत मुहम्मद स.अ.व. ही हैं। (तरयाकुल कुलूब, पृ. 13)

(4) उसने मुझे भेजा है ता कि मैं इस्लाम को प्रमाणों और दलीलों के साथ सम्पूर्ण जातियों व धर्मों पर विजय करके दिखा दूँ। अल्लाह तआला ने इस श्रेष्ठ (बा बरकत) युग में चाहा है कि उसका प्रताप प्रकट हो अब कोई नहीं जो इसको रोक सके। (मल्फ़ूज़ात भाग 1, पृ. 432)

(5) जीवित धर्म वह है जिसके द्वारा जीवित ख़ुदा मिले जीवित ख़ुदा वह है जो हमें बिना किसी मार्ग के मुल्हम (जिस पर ईशवाणी उतरे) कर दे या कम से कम यह कि हम बिना किसी वास्ता के मुल्हिम (ख़ुदा) को देख सकें।

अत: मैं सम्पूर्ण संसार को खुशखबरी देता हूँ कि यह जीवित ख़ुदा इस्लाम का ख़ुदा है।''

(मजमुआ इश्तिहारात, भाग 2, पृ. 311)

(6) हमारे धर्म का संक्षेप व निचोड़ (मूल शिक्षा) यह है कि ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह हमारी आस्था जो हम इस सांसारिक जीवन में रखते हैं जिस के साथ हम अल्लाह की कृपा से इस नाशीय संसार से कूच करेंगे यह है कि हज़रत मुहम्मद स.अ.व. ख़ातमुन्नबीय्यीन और तमाम अवतारों से श्रेष्ठ हैं जिन के द्वारा धर्म सम्पूर्ण हो चुका... और हम दृढ़ विश्वास के साथ इस बात पर ईमान रखते हैं कि पवित्र क़ुरआन अन्तिम ईश्वरीय ग्रंथ है।

(इज़ाला औहाम, पृ. 691, मिश्कात मार्च 2004, पृ. 4 से उद्धृत)

सम्पादकीय

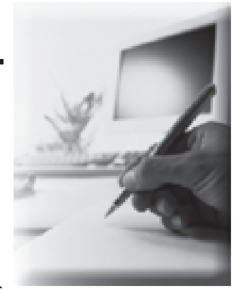

पवित्र क़ुरआन का अनुवाद व अर्थ समझने के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अनमोल उपदेश

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों के चारित्रिक नैतिक पतन की अवस्था में ''इमाम महदी'' के प्रकट होने की शुभ सूचना दी है। जिस के बारे में आप ने फ़र्माया कि वह ईमान को पुन: सुरय्या सितारा से लेकर आएगा और दिलों में स्थापित करेगा। इस युग में हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहब क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने यह घोषणा की कि अल्लाह तआला ने आप को सूचित किया है कि उम्मत में आने वाले महदी तथा मसीह आप हैं। आप ने पुन: इस्लाम तथा क़ुरआन की प्रतिष्ठा स्थापित की।

आप ने पवित्र क़ुरआन की समयनुकूल व्याख्या, संसार की प्रमुख भाषाओं में प्रकाशन आदि कई महत्वपूर्ण कार्य किए।

पवित्र क़ुरआन को समझने के बारे में आप के कुछ उद्धरण प्रस्तुत हैं।

आप अलैहिस्सलाम फर्माते हैं कि :-

तुम्हारे लिए एक अवश्यक शिक्षा यह है कि पवित्र क़ुरआन को तुम महजूर (परितयकत, छोड़ा हुआ) की तरह न छोड़ दो कि तुम्हारा जीवन इसी में है जो लोग क़ुरआन को सम्मान (इज़्ज़त) देंगे वह आकाश पर सम्मान पाएँगे। (किश्ती-ए-नूह, रूहानी ख़ज़ाईन, भाग 19, पृ. 13)

✻ ''अत: तुम क़ुरआन को समझ बूझ के साथ पढ़ो और इस से बहुत ही प्रेम करो ऐसा प्रेम करो कि तुम ने किसी से न किया हो क्योंकि जैसे कि ख़ुदा ने मुझे सम्बोधित करके फर्माया 'अल ख़ैरू कुल्लुहू फिल क़ुरआन' कि सम्पूर्ण प्रकार की भलाईयाँ पवित्र क़ुआन में ही है।''

(किश्ती-ए-नूह रूहानी ख़ज़ाईन भाग 19, पृ. 27)

✻ ''इसलिए पवित्र क़ुरआन की तिलावत करते रहो और दुआ करते रहो और अपने चाल-चलन (जीवन-चरित्र) को इसकी शिक्षाओं के अधीन रखने की कोशिश करो।''

(अलहकम 17 जनवरी 1907 ई.)

✻ ''पवित्र क़ुरआन का अनुवाद भी पढ़ो... क़ुरआन शरीफ़ को एक साधारण पुस्तक समझ कर न पढ़ो बल्कि इसको ख़ुदा का कलाम (बातें, शिक्षाएँ) समझ कर पढ़ो।''

(मल्फ़ूज़ात भाग 2, पृ. 191)

✻ ''क़ुरआन को पढ़ो समझो और सीखो जबकि संसार के साधारण कार्यों के सिखने के लिए तुम गुरू (उस्ताद) ढूँढते थे तो पवित्र क़ुर्आन के लिए उस्ताद (गुरू) की आवश्यकता क्यों नहीं?''

(मल्फ़ूज़ात भाग 5, पृ. 245)

✻ ''अरबी सीखें क्योंकि अरबी की शिक्षा के बिना क़ुरआन करीम का आनन्द नहीं आता अत: अनुवाद पढ़ने के लिए आवश्यक और मुनासिब है कि थोड़ी थोड़ी अरबी भाषा को सीखने की कोशिश करें आजकल तो आसान आसान अरबी सीखने के तरीक़े आ गए हैं पवित्र क़ुरआन को पढ़ना जबकि प्रत्येक का कर्तव्य है तो क्या इस का अर्थ यह है कि अरबी भाषा सीखने की कोशिश न की जाए और सारी उम्र अंग्रेज़ी और दूसरी भाषाओं को सीखने में समाप्त कर दी जाए।

(मल्फ़ूज़ात, भाग 1, पृ. 196)

''पवित्र क़ुरआन की शिक्षा का ऐसा ही अनुसरण करो जिस तरह हज़रत मुहम्मद स.अ.व. ने करके दिखाया पवित्र क़ुरआन के वास्तविक (सही) उद्देश्य को समझो और इस का अनुसरण करो।''

(मल्फ़ूज़ात भाग 2, पृ. 282)

क़ुरआन करीम के अर्थ उसके रहस्य व आध्यात्मिक बातों को समझने के लिए पहली व महत्वपूर्ण शर्त पवित्रता है जैसे कि आप अलैहिस्सलाम फर्माते हैं कि :-

''चौथा निशान पवित्र क़ुरआन के रहस्य व आध्यात्मिक ज्ञान का है पवित्र क़ुरआन के भेद व रहस्य उस व्यक्ति के सिवा किसी पर नहीं खुल सकते जो कि पवित्र हो चुका हो 'ला यमस्सोहू इल्लल् मुतह्हरून' अर्थात कोई उसे छू नहीं सकता सिवाए पवित्र किए हुए लोगों के।''

(सूर: अल-वाकिअ: 80)

✻ ''पवित्र क़ुरआन को बहुत पढ़ना चाहिए और पढ़ने की तौफीक ख़ुदा तआला से मांगनी चाहिए क्योंकि मेहनत के बिना मनुष्य को कुछ नहीं मिलता'' ''केवल क़ुरआन के अनुवाद के पढ़ने से कोई लाभ नहीं जबतक इसके साथ इसकी व्याख्या न हो उदाहरण के लिए ग़ैरिल् मग़ज़ूबि अलैहिम् वलज़्ज़ालीन के बारे में किसी को क्या समझ आ सकता है कि इस से अभिप्राय ईसाई व यहूदी हैं जब तक इसकी व्याख्या करके न बताई जाए।'' (इसलिए अनुवाद के साथ-साथ इसकी व्याख्या जानना भी अवश्यक है। (मल्फ़ूज़ात, भाग 3, पृ. 233, 449)

पवित्र क़ुरआन के अनुवाद के बारे में आप अलैहिस्सलाम फ़र्माते हैं कि :-

''मेरा दिल इस बात को नहीं मानता कि मैं पवित्र क़ुरआन का ऐसा अनुवाद करूँ जो स्वयं पवित्र क़ुरआन और शब्दकोश, और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की व्याख्या के विरुद्ध हो और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सम्मान में कमी का कारण बने।''

(मल्फ़ूज़ात, भाग 4, पृ. 160)

हमारी जमाअत के लोगों को चाहिए कि दूसरी जमाअतों की तरफ से अनुवाद हुए क़ुर्आन की जगह अपनी जमाअत का अनुवाद किया हुआ क़ुरआन पढ़े अल्लाह के फ़ज़्ल से जमाअत अहमदिय्या की तरफ से बहुत सी भाषाओं में पवित्र क़ुरआन का अनुवाद हो चुका है। अल्लाह तआला हम सब को पवित्र क़ुर्आन को पढ़ने व समझने की तौफ़ीक़ अता फ़र्माए। (आमीन)

(शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री)

✻✻✻

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल् मसीह अल् ख़ामिस
अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल् अज़ीज़
30 मई 2014 ई. स्थान – बैतुल फ़ुतूह, लन्दन

अल्लाह तआला की एक कृपा है और बहुत बड़ी कृपा है जिस ने जमाअत अहमदिया को एक ईकाई में पिरोया हुआ है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद ख़िलाफ़त का निज़ाम जारी है।

वह जमाअत जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के महत्व तथा स्थान को समझती है वह बहरहाल इस बात को समझती है कि ख़िलाफ़त से जुड़ कर रहना ही वास्तविक चीज़ है। इसी से जमाअत की ईकाई है। इसी से जमाअत की उन्नति है। इसी से अहमदियत के शत्रुओं एवं इस्लाम के आक्रमणों के उत्तर की शक्ति हम में उत्पन्न है क्योंकि ख़ुदा तआला की सहायता अल्लाह तआला के वादों (वचनों) के अनुसार अब इस्लाम के इस पुर्नउत्थान में ख़िलाफ़त के निज़ाम से सम्बंधित है।

प्रत्येक ख़िलाफ़त दिवस जो हम मनाते हैं हमें अपनी दुआओं और इबादतों और एकेश्वरवाद (तौहीद) पर सदृढ़ रहने और तौहीद को फैलाने की कसौटियों को मापने की तरफ ध्यान दिलाने वाला होना चाहिए। नहीं तो यदि यह नहीं, यदि हमारी कसौटियाँ ख़ुदा तआला से सम्बंध में पहले से उच्च नहीं हो रहीं तो जलसे, भाषणों, ज्ञान की बातें और खुशियाँ मनाना कोई महत्व नहीं रखते। अत: इस उद्देश्य को समझने की आवश्यकता है। दुआओं की तरफ हमारा ध्यान होगा तो तौहीद को समझने की तरफ हमारा ध्यान होगा तो हम में से प्रत्येक उन कृपाओं का उत्तराधिकारी बनेगा जिस का अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह

मौऊद अलैहिस्सलाम से वादा किया है।

जैसे कि मैंने बताया ख़िलाफ़त से सम्बंध रखते हुए अल्लाह तआला की कृपाओं को प्राप्त करने और परेशानियों से मुक्ति प्राप्त करने और शान्ति की अवस्था में आने वालों के लिए अल्लाह तआला ने दुआओं और इबादतों की तरफ ध्यान दिलाया है यही हमारे वास्तविक हथियार हैं जिन पर हम पूर्ण स्थाई रूप से भरोसा कर सकते हैं।

तशहहुद तअव्वुज़ और सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया–

अल्लाह तआला की एक कृपा और बहुत बड़ी कृपा है जिस ने जमाअत अहमदिया को एक इकाई में पिरोया हुआ है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद ख़िलाफ़त का निज़ाम जारी है जमाअत अहमदिया के इतिहास के पिछले 106 साल साक्षी हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के देहान्त के पश्चात जैसे कि आप अलैहिस्सलाम ने रिसाला अलवसीयत में वर्णन किया था जमाअत के लोगों ने पूर्ण आज्ञाकारिता के साथ ख़िलाफ़त के निज़ाम को स्वीकार किया। दुनिया में बसने वाला प्रत्येक अहमदी चाहे वह किसी भी देश से सम्बंध रखता है इस बात को अच्छी तरह समझता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आने के साथ जो नबुव्वत के द्वारा ख़िलाफ़त का क्रम आरम्भ हुआ था उस से जुड़ कर रहना उसका सबसे बड़ा कर्त्तव्य है। मैं उन लोगों की बात नहीं कर रहा जो आरम्भ में अलग हो गए और अब उनका कोई महत्व भी नहीं जो जमाअत अहमदिया के अधिकतर हैं, वह जमाअत जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के महान व उच्च स्थान को समझती है वह बहरहाल इस बात को समझती है कि ख़िलाफ़त से जुड़ कर रहना ही वास्तविक चीज़ है। इसी से जमाअत की इकाई है। इसी से जमाअत की उन्नति है। इसी से अहमदियत के शत्रुओं एवं इस्लाम के आक्रमणों के उत्तर की शक्ति हम में उत्पन्न है क्योंकि ख़ुदा तआला की सहायता अल्लाह तआला के वादों (वचनों) के अनुसार अब इस्लाम के इस पुर्नउत्थान में ख़िलाफ़त के निज़ाम से सम्बंधित हैं। लेकिन यह भी याद रखना चाहिए कि केवल मौखिक ईमान अल्लाह तआला की कृपा प्राप्त करने वाला नहीं बना देता बल्कि इस्तखलाफ की आयत में जहाँ अल्लाह तआला ने मोमिनों में ख़िलाफ़त का वादा फर्माया है, उन के भय को शान्ति में परिवर्तन करने की शुभसूचना दी है, ख़िलाफ़त से सम्बंध रखने वालों को सहिष्णुता प्रदान करने की घोषणा की है वहाँ इन पुरस्कारों को प्राप्त करने वाले वही लोग होंगे जो इबादतों एवं दुआओं की तरफ ध्यान करने वाले हों और इस उद्देश्य के लिए कुर्बानियाँ करने वाले हों कि ख़ुदा की तौहीद संसार में स्थापित करनी है। पहले भी कई बार बता चुका हूँ कि 'ला इलाहा इल्लल्लाह' कहने वाले तो बहुत से होंगे लेकिन वास्तविक 'ला इलाहा इल्लल्लाह' कहने वाले वही हैं जो प्रत्येक अवस्था में केवल ख़ुदा तआला की तरफ देखते हैं। अल्लाह के अतिरिक्त किसी और पर भरोसा नहीं करते अत: प्रत्येक ख़िलाफ़त दिवस जो हम मनाते हैं, हमें अपनी दुआओं और इबादतों और तौहीद पर सदृढ़ रहने और तौहीद को फैलाने की कसौटियों को मापने की तरफ ध्यान दिलाने वाला होना चाहिए। नहीं तो अगर यह नहीं, अगर हमारी कसौटियां अल्लाह तआला से सम्बंध में

पहले से उच्च नहीं हो रहीं हैं तो जलसे, भाषणों, ज्ञान की बातों और खुशियां मनाना कोई महत्व नहीं रखते। अत: इस उद्देश्य को समझने की आवश्यकता है। दुआओं की तरफ हमारा ध्यान होगा, तौहीद की वास्तविकता को जानने की तरफ हमारा ध्यान होगा तो हम में से प्रत्येक उन कृपाओं का उत्तराधिकारी बनेगा जिस का अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से वादा किया है। पिछले ख़ुत्ब: में भी मैंने बताया था कि प्रत्येक परेशानी व प्रत्येक कठिनाई के समय हमें ख़ुदा तआला के आगे झुकना चाहिए। दुनिया का जो विरोध करने का तरीका है हमें उस से कोई लेना-देना नहीं है जैसे कि मैंने बताया ख़िलाफ़त से सम्बंध रखते हुए अल्लाह तआला की कृपाओं को प्राप्त करने और परेशानियों से मुक्ति पाने और शान्ति की अवस्था में आने वालों के लिए अल्लाह तआला ने दुआओं व इबादतों की तरफ ध्यान दिलाया है। अत: यही हमारे वास्तविक हथियार हैं जिन पर हम पूर्ण रूप से भरोसा करते हैं। दुआओं के हथियार को छोड़ कर हम छोटे और अस्थाई हथियारों की तरफ देखेंगे तो हमें सफलता नहीं मिल सकती, न कभी छोटे हथियारों से किसी को सफलता मिली है अथवा मिला करती है। नबियों के इतिहास में हमें सफलताएँ उन्हीं दुआओं के द्वारा से ही प्राप्त होती दिखाई देती हैं और विशेषकर जब हम इस्लाम का इतिहास देखें और विशेषत: हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और ख़िलाफ़ते राशिदा के ज़माने को देखें तो संसारिक शक्ति से नहीं, अल्लाह तआला की कृपाओं से ही विजय मिली हैं। अल्लाह तआला के वादों के अनुसार विजय मिली लेकिन यह भी याद रखना चाहिए कि सारे वादों के होते हुए विजय प्राप्त करने के लिए जीवन के त्याग करने पड़े इबादतों की कसौटियां भी उच्च करनी पड़ीं।

यहाँ संकेत के रूप में बता दूँ कि मैंने पिछले खुत्ब: में एक अहमदी का वर्णन किया था जिसने अपने शिया दोस्त के हवाले से यह बात की थी कि तुम लोग सही उत्तर नहीं देते और यह भी शायद मैंने बताया था कि लगता है कि उन अहमदी दोस्त की सोच भी यह है कि संसारिक साधनों के प्रयोग की तरफ हमें ध्यान देना चाहिए। मैंने नाम तो नहीं लिया था लेकिन बहरहाल समझ गए। उन्होंने मुझे पत्र लिखा कि मैंने अपने शिया दोस्त का वर्णन किया था मेरी ऐसी सोच नहीं है लेकिन बहरहाल मुझे और विभिन्न स्थानों से ऐसी बातें मिलती रहती हैं जिन से ऐसी सोच का प्रकटन होता है इसलिए हमें याद रखना चाहिए कि अल्लाह तआला के पुरस्कार दुआओं से मिलते हैं।

अल्लाह तआला इस तरफ ध्यान करवाते हुए फर्माता है कि فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ○ अत: तू अपने पालनहार की इबादत कर और उसके लिए कुर्बानियँ दे (अल-कौसर : 3) फिर यह जो इबादत एवं कुर्बानियां हैं अल्लाह तआला की कृपाओं का उत्तराधिकारी बनाऐंगी। इस में भी कोई सन्देह नहीं कि यह मनुष्य की प्रकृति है और यह जो प्रकृति है उसके अनुसार समय की परेशानियाँ और कठिनाईयां और परीक्षाएँ मनुष्य को विचलित कर देती हैं। और जैसे कि मैंने पिछले ख़ुत्ब: में कहा था ऐसी परिस्थितियों में रसूल एवं मोमिन भी 'मता नस्रुल्लाहे' कि

Mob. 09934765081

حضرت ابوہریرہؓ بیان کرتے ہیں کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ: "اچھا صدقہ یہ ہے کہ ایک مسلمان علم حاصل کرے پھر اپنے مسلمان بھائی کو سکھائے۔"

(حدیث)

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E. & C.C.E are available here. Also available books for Childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

अल्लाह की सहायता कब आएगी यह आवाज़ उठाते हैं विचलित होकर उनके दिल से यह आवाज़ निकलती है निराशा के कारण नहीं बल्कि अल्लाह तआला की दया को उभारने के लिए, उस की कृपा को प्राप्त करने के लिए अपने आप को पूर्णरूप से ख़ुदा तआला की गोद में डालते हुए दुआओं को अपनी अन्तिम सीमा तक पहुँचाते हुए कुर्बानियों की कसौटियाँ स्थापित करते हुए यह आवाज़ ऊँची करते हैं। तब फिर ख़ुदा तआला की तरफ से यह आवाज़ आती है कि 'अला इन्ना नस्रुल्लाहे करीब' अर्थात सुनो निस्सन्देह अल्लाह तआला की सहायता समीप है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से भी अल्लाह तआला ने यही फ़र्माया है (तज़करा पृ. 39 संस्करण चार प्रकाशित रब्वा) भिन्न-भिन्न समय में आप ने अल्लाह तआला की सहायता के दृश्य देखे हैं आप को भी ईशवाणी से यही कहा गया और फिर ऐसा हुआ भी। आप अलैहिस्सलाम ने तो यह दृश्य देखे हैं लेकिन हमने भी विभिन्न समय में देखे हैं और देखते रहते हैं और इन्शाअल्लाह आगे भी देखते रहेंगे। इस की अपनी अपनी सीमाएँ हैं कि जब अल्लाह आला की सहायता अपने दृश्य दिखाती है और फिर अल्लाह तआला की सहायता का विजय के रूप में अन्तिम व महान दृश्य भी इन्शाअल्लाह हम देखेंगे शत्रु की योजनाएँ बहुत खतरनाक है सांसारिक दृष्टि से देखें तो देखने में खतरनाक परिस्थिति दिखाई देती है विशेषकर इस्लामी देशों और पाकिस्तान में विशेष रूप से, लेकिन अल्लाह तआला तो सर्वशक्तिमान है वह **ख़ैरुल माकेरीन** है शत्रु की सारी योजनाओं को मिट्टी में मिलाने की शक्ति रखता है और इन्शाअल्लाह उन सबकी योजनाएँ उन्हीं पर उलटाई जाएँगी लेकिन हमें दुआओं व क्षमायाचना की तरफ बहुत अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। अपनी परेशानियों को दूर करने के लिए भी और अल्लाह तआला की तरफ से आने वाली विजय को संभालने के लिए भी हमें दुआओं की आवश्यकता है इसलिए अल्लाह तआला ने यह फर्माया है कि فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ۚ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا (अन नसर : 4) अर्थात अत: अपने रब्ब की प्रशंसा के साथ स्तुति कर और उस से क्षमायाचना मांग अत: इस विषय को समझने के लिए हम सबको आवश्यकता है अपनी दुआओं को अन्तिम सीमा तक पहुँचाने का प्रयास करें। मैंने पहले भी इस तरफ ध्यान करवाया है कि कुर्बानियों के विषय को तो हम समझते हैं लेकिन दुआएं की वास्तविकता को समझने की अभी बहुत आवश्यकता है। यदि हम ने इन कुर्बानियों के फल शीघ्र से शीघ्र प्राप्त करने हैं तो दुआओं की कसौटियों को बहुत अधिक उच्च करने की आवश्यकता है अपने भीतर वह स्थिति उत्पन्न करने की आवश्यकता है जो ख़ुदा तआला हम से चाहता है अल्लाह तआला फर्माता है कि :-

أَمَّنْ يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوءَ
وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَاءَ الْأَرْضِ ۗ أَإِلَٰهٌ مَعَ اللَّهِ ۚ قَلِيلًا مَا
تَذَكَّرُونَ ○ (अन-नमल : 63)

अर्थात :- (बताओ तो) कौन किसी लाचार की दुआ सुनता है जब वह (उस) ख़ुदा से दुआ करता है और (उस की) तकलीफ को दूर करता है। और वह तुम (दुआ करने वाले इन्सानों) को (एक दिन) सारी धरती का

उत्तराधिकारी बना देगा क्या (उस सर्वशक्तिमान) अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य है? तुम बिलकुल शिक्षा ग्रहण नहीं करते। (अनुवाद तफसीर-ए-सग़ीर से)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस बारे में फर्माते हैं :-

"याद रखो कि ख़ुदा तआला को किसी की आवश्यकता नहीं जब तक अधिकता के साथ और बार-बार व्याकुल होकर दुआ नहीं की जाती वह परवाह नहीं करता। देखो किसी की पत्नी अथवा बच्चा बिमार हो या किसी पर गम्भीर मुकद्दमा हो जाए तो इन के लिए वह कैसी व्याकुलता होती है। अत: दुआ में भी जब तक सच्ची तड़प और बेचैनी की स्थिति उत्पन्न न हो तब तक वह बिलकुल अप्रभावित एवं व्यर्थ कार्य है। दुआ की स्वीकृति के लिए तड़प होना शर्त है जैसा कि फर्माया اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ (अलनमल : 63) (मल्फ़ूज़ात भाग 5, पृ. 455, संस्करण 2003, प्रकाशन रब्वा)

अत: हमें अपनी इबादतों और दुआओं में पहले से बढ़ कर ध्यान देने की आवश्यकता है बेचैनी उत्पन्न करने की आवश्यकता है। अल्लाह तआला की दया को उभारने की आवश्यकता है। इस समय मैं कुछ दुआओं की तरफ भी ध्यान दिलाना चाहता हूँ। जो जमाअत अहमदिया की जुबली के लिए पहले भी हज़रत खलीफतुल मसीह सालिस (तृतीय) ने बताई थीं फिर बाद में खिलाफत जुबली के लिए मैंने बताई थीं। इन को भूलना नहीं, न कम करना। इन को हमेशा करते रहना चाहिए। स्थाई रूप से अपने जीवनों का भाग बनाना चाहिए और फिर अपनी नमाज़ों को अपनी इबादतों को भी संवार कर अदा करने की और उसका हक अदा करते हुए अदा करने की कोशिश करनी चाहिए। तभी हम दुआओं का भी हक पूरा कर सकते हैं।

एम.टी.ए. पर तो यह दुआऐं आती रहती हैं लेकिन बहरहाल याद दिलाने के लिए बता देता हूँ इन में से पहले सुर: फातिहा है इसको बहुत अधिक पढ़ना चाहिए। दरूद शरीफ है जो हम नमाज़ में पढ़ते हैं, उसको बार-बार पढ़ें, फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को जो इलहामी दुआ सिखाई गई थी :-

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ

सुब्हानल्लाहे व बिहम्मदिही सुब्हानल्लहिल् अज़ीम अल्लाहुम्-मा सल्ले अला मुहम्म्-मदिन व आले मुहम्म्-दिन। (तज़करा पृ. 25, संस्करण 4, प्रकाशित रब्वा)

इसको बहुत अधिक पढ़ें। एक हदीस में आता है कि हज़रत अबु हुरैरा रज़ि. वर्णन करते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वस्लम ने फर्माया कि दो कलमे (वाक्य) ऐसे हैं जो बोलने के लिए जीभ पर बहुत ही हल्के हैं लेकिन भार के लिए तुला में बहुत भारी हैं और

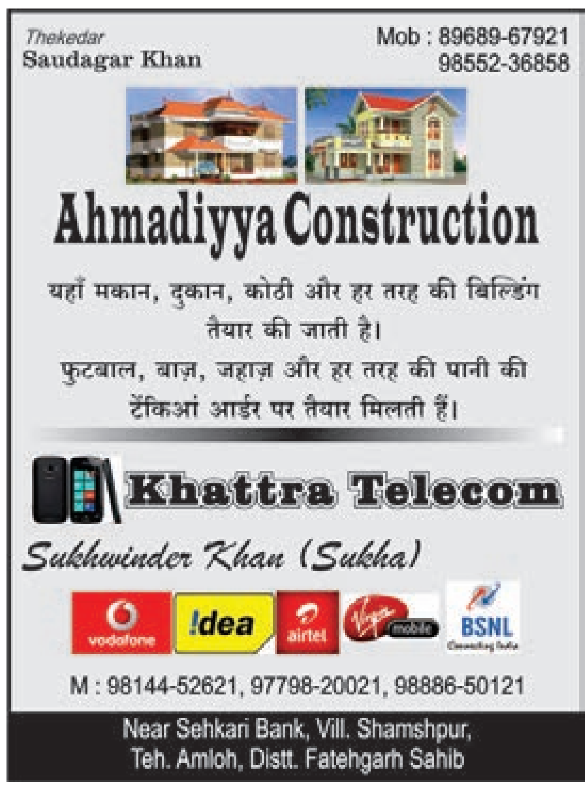

अल्लाह तआला को बहुत प्रिय हैं और वह 'सुब्हानल्लाहे व बिहम्मदिही सुब्हानल्लाहिल् अज़ीम' है। आप ने फर्माया ख़ुदा को बहुत प्रिय हैं। अत: अल्लााह तआला की दया को उभारने के लिए यह दुआ भी बहुत आवश्यक है। (सही बुखारी किताबुल दा'वात वा फज़्ले तस्बीह हदीस नं. 6406)

फिर यह दुआ थी जो अब भी पढ़नी चाहिए कि :-

رَبَّنَا لَاتُزِغۡ قُلُوۡبَنَا بَعۡدَ اِذۡهَدَیۡتَنَا وَهَبۡ لَنَا مِنۡ لَّدُنۡكَ رَحۡمَةً اِنَّكَ اَنۡتَ الۡوَهَّابُ۔(اٰل عمران:9)

रब्बाना ला तुज़िग़ कुलुबना बअदा इज़ हदैतना व हब्लना मिन्लादुन्का रहमतन् इन्नका अन्तल् वह्हाब। (आले इम्रान : 9)

अनुवाद :- हे हमारे अल्लाह! हमारे हृदयों को टेढा न होने देना इस के बाद कि तू हमें हिदायत दे चुका है। और हमें अपनी तरफ से रहमत प्रदान कर। नि:सन्देह तू ही बहुत अधिक प्रदान करने वाला है।

हज़रत नवाब मुबारका बेग़म साहिबा ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के देहान्त के पश्चात स्वप्न देखा था जिस में आप अलैहिस्सलाम ने बार-बार कहा कि यह दुआ बहुत पढ़ा करो 'रब्बना ला तुज़िग् कुलुबना' वाली। हज़रत खलीफा अव्वल (प्रथम) को जब आपने यह स्वप्न बताया तो हज़रत ख़लीफा अव्वल ने फर्माया मैं इसे अब कभी पढ़ना नहीं छोड़ूँगा बहुत अधिक पढूँगा और यह फर्माया कि जहाँ इस में ईमान की दृढ़ता के लिए अल्लाह तआला से पुकार है वहाँ यह दुआ खिलाफत के निज़ाम से जुड़े रहने के लिए भी बहुत बड़ी दुआ है। (उद्धरित तहरीरात मुबारका पृ. 306-307 प्रकाशन, शाखा प्रकाशन लजना इमाइल्लाह पाकिस्तान से उद्धरित)

फिर एक दुआ थी जिस पर बहुत ज़्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है

رَبَّنَا اَفۡرِغۡ عَلَیۡنَا صَبۡرًا وَّ ثَبِّتۡ اَقۡدَامَنَا وَانۡصُرۡنَا عَلَی الۡقَوۡمِ الۡکٰفِرِیۡنَ۔(البقرة:251)

रब्बना अफरिग़ अलैना सबरन् व सब्बित अक्दामना वन् सुरना अलल् कौमिल काफीरीन्। (अल्-बकरह : 251)

अनुवाद :- हे हमारे रब्ब! हम पर धैर्य नाज़िल कर और हमारे कदमों को मज़बूती प्रदान कर और काफिर कौम के विरुद्ध हमारी सहायता कर।

फिर -

اَللّٰھُمَّ اِنَّا نَجۡعَلُكَ فِیۡ نُحُوۡرِهِمۡ وَنَعُوۡذُ بِكَ مِنۡ شُرُوۡرِ هِمۡ

अल्लाहुम्मा इन्ना नजअलुका फी नुहूरिहीम व नऊज़ुबिका मिन शुरूरेहिम की दुआ है।

एक रिवायत में आता है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब किसी कौम की तरफ से खतरे का अनुभव करते तो आप यह दुआ पढ़ते थे।

اَللّٰھُمَّ اِنَّا نَجۡعَلُكَ فِیۡ نُحُوۡرِهِمۡ وَنَعُوۡذُ بِكَ مِنۡ شُرُوۡرِ هِمۡ

Fawad Anas Ahmed
GOLDEN GROUP REAL ESTATE
LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE
दुआओं का आवेदक
DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

अल्लाहुम्मा इन्ना नजअलुका फी नुहूरिहीम व नऊज़ुबिका मिन शुरूरेहिम अर्थात हे अल्लाह! हम तुझे उन के सीनों में डालते हैं और उनकी शरारतों से तेरी शरण मांगते हैं। (सुनन अबी दाऊद अव्वल किताबुस्सलात बाब मा यकुलु रजुलु इज़ा खाफा कौमन हदीस नं. 1537)

अल्लाहुम्मा इन्ना नजअलुका फी नुहूरीहिम का अनुवाद, हे अल्लाह हम तुझे उनके सीनों में डालते हैं पूरी तरह स्पष्ट नहीं होता समझ नहीं आता इसका क्या अर्थ है ''नहर'' के अर्थ बताऊँ तो शायद अधिक स्पष्ट हो जाए। 'अन-नहर' कहते हैं सीने के ऊपरी भाग को या सीना व गर्दन के जोड़ को और विशेषकर उस जगह जहाँ गढ़ा है उस स्थान को जो सांस की ग्रंथी का ऊपरी भाग है अथार्त इसका यह अर्थ होगा कि हे अल्लाह तू ही उन पर ऐसा वार कर जिस से उनके जीवन का क्रम समाप्त हो जाए और हम उनकी शरारतों से बच जाऐं। तू ही है जो उन शरारतियों और झगड़ा पैदा करने वालों और अत्याचार करने वालों की शक्ति समाप्त करने वाला है अत: उनका सर्वनाश कर उन की हानियों से बचने के लिए हमे अपनी शरण में ले ले।

फिर जैसे कि मैंने कहा अल्लाह तआला क्षमायाचना के बारे में भी फर्माता है कि बहुत क्षमायाचना करो।

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّيْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ وَّ اَتُوْبُ اِلَيْهِ

अस्तगफिरुल्लाहे रब्बी मिन कुल्ले ज़म्बिंव व अतूबु इलैही की दुआ है।

फिर इस तरह कुछ समय हुआ मैंने एक सपने के आधार पर कहा था कि

رَبِّ كُلُّ شَيْءٍ خَادِمُكَ رَبِّ فَاحْفَظْنِيْ وَانْصُرْنِيْ وَارْحَمْنِيْ

'रब्बे कुल्लु शईन खादिमुका रब्बे फहफज़्नी वन्सुरनी वर्हमनी' (तज़करा पृ. 363 संस्करण 4 प्रकाशन रब्वा) की दुआ बहुत अधिक पढ़े।

फिर यह दुआ भी इसमें शामिल करें जो मैंने पिछले खुत्ब: में बताई थी कि

رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِيْ اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ (آل عمران:148)

'रब्बाना अगफिरलना जुनूबना व इस्राफना फी अमरीना व सब्बित अक्दामना वन्सुरना अललकौमिल काफीरीन्। (आले इम्रान : 148)

अनुवाद :- हे हमारे रब्ब! हमारी भूल अर्थात

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE
Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443
Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers
Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

☎ : 06784-230727
Mob. : 9437060325
Is Allah not sufficient for His servant
JANATA
STONE CRUSHING INDUSTRIES
Mfg. :
Hard Granite Stone. Chips, Boulder etc.
LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE
At - Tisalpur, P.O. - Rahanja,
Distt. - Bhadrak - 756 111

गल्तियाँ और हमारे कर्मों में हमारी अधिकता में क्षमा कर और हमारे कदमों को मज़बूत कर और काफिर लोगों के विरुद्ध हमारी सहायता कर।

इस के अतिरिक्त हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक इल्हामी दुआ है इसे पढ़ने की बहुत आवश्यकता है शत्रु अब अपनी अन्तिम सीमा तक पहुँचा हुआ है हमें भी दुआएँ करनी चाहिएँ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फर्माते हैं कि मैं अपनी जमाअत के लिए और फिर क़ादियान के लिए दुआ कर रहा था तो यह इल्हाम हुआ कि जीवन के फैशन से दूर जा पड़े हैं फिर ''**फसहि्हक् हुम तसहीकन्**'' अर्थात अत: पीस डाल उनको अच्छी तरह पीस डालना। फर्माया कि मेरे दिल में (विचार) आया कि इस पीस डालने को मुझे क्यों कहा गया है इतने में मेरी दृष्टि इस दुआ पर पड़ी जो एक वर्ष हो गया बैअतुद्दुआ पर लिखी हुई है वह दुआ यह है :-

يَارَبِّ فَاسْمَعْ دُعَآئِيْ وَمَزِّقْ اَعْدَآئَكَ وَ اَعْدَآئِيْ وَاَنْجِزْ وَعْدَكَ وَانْصُرْ عَبْدَكَ وَاَرِنَا اَيَّامَكَ وَشَهِّرْلَنَا حُسَامَكَ وَلَا تَذَرْ مِنَ الْكَافِرِيْنَ شَرِيْرًا ـ ك

''या रब्बि फसमअ दुआई व मज़्ज़िक अ'अदाअका वा अ'अदाई व अनजिज़ वअदका वनसुर अबदका व अरिना अय्यामका व शहहिर लना हुसामाका व ला तज़र मिनल काफीरीना शरीरा।''

अर्थात हे मेरे ख़ुदा! तू मेरी दुआ सुन और अपने शत्रु और मेरे शत्रुओं को टुकड़े-टुकड़े कर दे और अपना वादा पूरा फरमा और अपने बन्दे की सहायता कर और हमें अपने दिन दिखा हमारे लिए अपनी तलवार मयान से निकाल ले और इनकार करने वालों में से किसी शरारती को बाकी न रख। (उद्धरित तज़क़रा पृ. 426, संस्करण 4 प्रकाशित रब्वा)

अत: यह दुआऐं हैं इनकी तरफ बहुत ध्यान देने की आवश्यकता है।

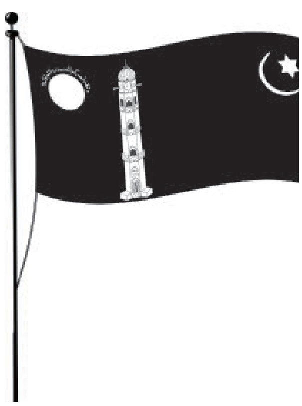

ऐलान

124वाँ जलसा सालाना क़ादियान

26-27 और 28 दिसम्बर 2015

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 124वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए दिनांक 26, 27 और 28 दिसम्बर 2015 ई. (शनिवार, एतवार व सोमवार) की तिथियों की अनुमति दे दी है।

जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसा में शामिल होने की निय्यत करके तैयारी शुरू कर दें।

अल्लाह तआला हम सब को इस इलाही जलसा से लाभान्वित होने की तौफ़ीक प्रदान करे। इस जलसा सालाना के हर प्रकार से कामयाब और बा-बरकत होने और खुशकिस्मत रूहों की हिदायत का कारण बनने के लिए दुआऐं जारी रखें। जज़ाकुमुल्लाह तआला व अहसानुल जज़ा!

(नाज़िर इस्लाह व इर्शाद मरकज़िया, क़ादियान)

लेखक - हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि.

पिछले भाग का सारांश :- मक्का के क़ुरैश आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मदीना हिजरत के बाद से निरन्तर आप को विभिन्न तरीकों द्वारा परेशान कर रहे थे यहाँ तक कि बदर तथा उहद के दो दो युद्ध हुए। मक्का वालों ने अरब के अन्य कबीलों को इस्लाम के विरुद्ध इकट्ठा किया और मदीना पर आक्रमण का सोचा। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मदीने की सुरक्षा के लिए ख़न्दक खोदना शुरू की इस युद्ध में मुसलमानों की संख्या क्या थी इस बारे में वर्णन हो चुका है। अब आगे...

बनू क़ुरैज़ा का विश्वासघात

चूंकि मदीना का एक ओर का पर्याप्त भाग ख़न्दक़ से सुरक्षित था और दूसरी ओर कुछ पर्वतीय टीले, पक्के मकान तथा कुछ बाग़ आदि थे, इसलिए सेना तुरन्त आक्रमण नहीं कर सकती थी। अतः उन्होंने परामर्श करके यह उपाय किया कि किसी प्रकार यहूद का तीसरा क़बीला जो अभी मदीना में शेष था, जिसका नाम बनू क़ुरैज़ा था अपने साथ मिला लिया जाए और इस के द्वारा मदीना तक पहुँचने का मार्ग खुल जाए। अतः परामर्श के पश्चात हुय्यि इब्ने अख़तब को जो बनू नज़ीर का सरदार था जिसको देश से निकाला जा चुका था और जिसके उपद्रव और उत्पात के कारण सम्पूर्ण अरब एकत्र होकर मदीना पर आक्रमणकारी हुआ था, काफ़िरों की सेना के सेनापति अबू सुफ़यान ने इसे इस बात पर नियुक्त किया कि जैसे भी हो बनू क़ुरैज़ा को अपने साथ मिला लो। अतः हुय्यिइब्ने अख़तब यहूदियों के क़िलों की ओर गया। उसने बनू क़ुरैज़ा के सरदारों से मिलना चाहा। पहले तो उन्होंने मिलने से इन्कार कर दिया परन्तु जब उसने उन्हें समझाया कि इस समय सारा अरब मुसलमानों का विनाश करने के लिए आया है तथा यह बस्ती समस्त अरब का मुकाबला किसी भी प्रकार नहीं कर सकती। इस समय जो सेना मुसलमानों के मुकाबले पर खड़ी है उसे सेना नहीं कहना चाहिए अपितु ठाठे मारने वाला समुद्र कहना चाहिए। इस प्रकार अन्ततः उस ने बनू क़ुरैज़ा को ग़द्दारी और संधि भंग करने पर तैयार कर दिया तथा यह निर्णय हुआ कि काफ़िरों की सेना सामने की ओर से ख़न्दक़ पार करने का प्रयास करे और जब वह ख़न्दक पार करने में सफल हो जाएगी तो बनू क़ुरैज़ा की दूसरी ओर से मदीने के उस भाग पर आक्रमण कर देंगे जहाँ स्त्रियाँ और बच्चे हैं जो बनू क़ुरैज़ा पर विश्वास करके असुरक्षित छोड़ दिए गए थे।

इस प्रकार मुसलमानों का मुकाबला करने की शक्ति पूर्णतया कुचली जाएगी तथा एक ही बार में मुसलमान पुरुष, स्त्रियाँ और बच्चे सब मार दिए जाएँगे। यह निश्चित बात है कि यदि इस योजना में काफ़िरों को कुछ सफलता भी मिल जाती तो मुसलमानों के लिए सुरक्षा का कोई स्थान शेष नहीं रहता था। बनू कुरैज़ा मुसलमानों के समझौते के अनुसार मित्र थे और यदि वे इस खुले युद्ध में सम्मिलित न भी होते तब भी मुसलमान यह आशा करते थे कि उनकी ओर से होकर मदीने पर कोई आक्रमण नहीं कर सकेगा। यही कारण था कि उनकी ओर का भाग बिल्कुल असुरक्षित छोड़ दिया गया था। बनू क़ुरैज़ा और काफ़िरों ने इस परिस्थिति के उपलक्ष्य यह निर्णय कर दिया था कि जब बनू क़ुरैज़ा काफ़िरों के साथ मिल गए तो वे प्रत्यक्ष रूप से काफ़िरों की सहायता न करें, ताकि ऐसा ने हो कि मुसलमान मदीने के इस भाग की सुरक्षा की भी कोई व्यवस्था कर लें जो बनू क़ुरैज़ा के क्षेत्र के साथ लगता था। यह योजना अत्यन्त भयानक थी। मुसलमानों को असावधान रखते हुए बनू क़ुरैज़ा का ऐसी आपात स्थिति में शत्रु के साथ जा मिलना, जबकि शत्रु की सेना का इस्लामी सेना पर भयानक आक्रमण हो रहा हो मदीने की उस ओर की सुरक्षा को जिस ओर बनू क़ुरैज़ा के क़िले थे बिल्कुल असंभव बना दिया था। मुसलमानों पर दोनों ओर से आक्रमण की संभावना के पश्चात मक्का की सेना ने ख़न्दक़ पर आक्रमण प्रारम्भ किया। पहले कुछ दिन तो उनकी समझ में न आया कि वे ख़न्दक़ को किस प्रकार पार करें परन्तु दो चार दिन के पश्चात उन्होंने यह उपाय निकाला कि धनुषधारी ऊँचे स्थानों पर खड़े होकर उन मुसलमान दलों पर वाण बरसाना आरम्भ कर देते थे जो ख़न्दक़ की सुरक्षा के लिए ख़न्दक़ के साथ-साथ थोड़ी-थोड़ी दूरी पर बैठाए गए थे। जब तीरों की बौछार के कारण मुसलमान पीछे हटने पर विवश हो जाते तो उच्च कोटि के घुड़सवार ख़न्दक फांदने का प्रयास करते। विचार किया गया कि इस प्रकार के निरन्तर आक्रमणों के परिणामस्वरूप कोई न कोई ऐसा स्थान निकल आएगा जहाँ से पैदल सेना अधिक संख्या में ख़न्दक़ पार कर सकेगी। ये आक्रमण निरन्तर इतनी अधिकता के साथ किए जाते थे कि कई बार मुसलमानों को सांस लेने का भी अवसर नहीं मिलता था। अतः एक दिन आक्रमण इतना भीषण हो गया कि मुसलमानों की कुछ नमाज़ें समय पर अदा न हो सकीं, जिसका रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को इतना आघात पहुँचा कि आप ने फ़र्माया ख़ुदा काफ़िरों को दण्ड दे, उन्होंने हमारी नमाज़ें

नष्ट कीं। यद्यपि मैंने यह वृत्तान्त शत्रुओं के आक्रमणों की भयंकरता प्रकट करने के लिए वर्णन किया है परन्तु इस से मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के चरित्र पर अत्यधिक प्रकाश पड़ता है और ज्ञात होता है कि आप के लिए संसार में सर्वप्रिय वस्तु ख़ुदा तआला की उपासना थी। जब कि शत्रु मदीना को चारों ओर से घेरे हुआ था, जब कि मदीना के पुरुष तो पृथक रहे स्त्रियों और बच्चों के प्राण भी ख़तरे में थे। जब हर समय मदीने के लोगों का हृदय धड़क रहा था कि शत्रु किसी ओर से मदीने के अन्दर प्रवेश न कर जाए, उस समय भी मुहम्मद रसूलुल्लाह की इच्छा यही थी कि ख़ुदा तआला की इबादत यथा समय उचित प्रकार से अदा हो जाए। मुसलमानों की उपासना यहूदियों, ईसाइयों और हिन्दुओं की भांति सप्ताह में किसी एक दिन नहीं हुआ करती अपितु मुसलमानों की इबादत (उपासना) एक दिन में पाँच बार होती है। ऐसी ख़तरनाक अवस्था में तो दिन में एक बार भी नमाज़ अदा करना मनुष्य के लिए कठिन है कहाँ, पाँच समय और वह भी यथाविधि नियमपूर्वक बाजमाअत (सामूहिक तौर पर) नमाज़ अदा की जाए, परन्तु इन विकट परिस्थितियों में भी मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ये पाँचों नमाज़ें निर्धारित समय पर अदा करते थे और यदि एक दिन शत्रु के भीषण आक्रमण के कारण आप स.अ.व अपने रब्ब का नाम सन्तोष और शान्ति से यथा समय न ले सके तो आपको अत्यधिक मानसिक कष्ट पहुँचा। उस समय सामने से शत्रु आक्रमण कर रहा था तथा पीछे से बनू क़ुरैज़ा इस घात में थे कि कोई अवसर मिल जाए तो मुसलमानों में सन्देह पैदा किए बिना वे मदीने के अन्दर घुस कर स्त्रियों और बच्चों का वध कर दें। अतः एक दिन बनू क़ुरैज़ा ने एक जासूस भेजा ताकि वह मालूम करे कि स्त्रियां और बच्चे अकेले ही हैं अथवा पर्याप्त सिपाही सुरक्षा पर नियुक्त हैं। जिस विशेष घेरे में वे विशेष-विशेष ख़ानदान जिन्हें शत्रु से बहुत ख़तरा था एकत्र कर दिए गए थे उसके निकट एक जासूस ने आकर घूमना और चारों ओर से निरीक्षण करना प्रारम्भ किया कि मुसलमान सैनिक कहीं आस-पास छुपे हुए तो नहीं। वह अभी इसी टोह में लगा था कि रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की फूफी हज़रत सफ़ियारज़ि. ने उस देख लिया। संयोग से उस समय वहाँ एक ही मुसलमान मौजूद था और वह भी बीमार था। हज़रत सफ़ियारज़ि. ने उस से कहा कि यह व्यक्ति काफी समय से स्त्रियों के क्षेत्र में मंडला रहा है और जाने का नाम नहीं लेता तथा चारों ओर देखता फिरता है। यह निश्चत ही जासूस है; तुम

इसका मुकाबला करो, ऐसा न हो कि शत्रु परिस्थितियों पर पूर्णरूप से अवगत हो कर इधर आक्रमण कर दे। इस रोगग्रस्त सहाबी ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया, तब हज़रत सफ़ियारज़ि. ने स्वयं एक बड़ा बांस लेकर उस व्यक्ति का मुकाबला किया तथा अन्य स्त्रियों की सहायता से उसे मारने में सफल हो गईं। छान-बीन करने पर ज्ञात हुआ कि वह यहूदी बनू क़ुरैज़ा का जासूस था। अतः मुसलमान और अधिक घबराए तथा समझे कि अब मदीने का यह भाग भी सुरक्षित नहीं है परन्तु सामने की ओर से शत्रु का इतना दबाव था कि वे इस ओर की सुरक्षा की कोई व्यवस्था भी नहीं कर सकते थे। इसके बावजूद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने स्त्रियों की सुरक्षा को प्राथमिकता दी और जैसा कि वर्णन किया जा चुका है बारह सौ सैनिकों में से पाँच सौ को स्त्रियों की सुरक्षा के लिए शहर में नियुक्त कर दिया तथा ख़न्दक़ की सुरक्षा तथा अठारह-बीस हज़ार सेना के मुकाबले के लिए केवल सात सौ सैनिक रह गए। इस परिस्थिति में कुछ मुसलमान घबरा कर रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के पास आए और कहा हे अल्लाह के रसूल ! परिस्थितियां नितान्त भयानक रूप धारण कर चुकी हैं अब प्रकट रूप से मदीने के बचने की कोई आशा दिखाई नहीं देती; आप स. ख़ुदा तआला से विशेष तौर पर दुआ करें और हमें भी कोई दुआ सिखाएँ, जिसके पढ़ने से हम पर ख़ुदा तआला की कृपा हो। आप स. ने फ़रमाया तुम लोग घबराओ नहीं, तुम ख़ुदा तआला से यह दुआ किया करो कि तुम्हारे दोषों पर पर्दा डाले, तुम्हारे हृदयों को दृढ़ता प्रदान करे तथा घबराहट को दूर करे। फिर आप(स) ने स्वयं भी इस प्रकार दुआ की

اَللّٰھُمَّ مُنزل الْكِتٰبِ سَرِيْع الْحِساب اهْزِمِ الْاَحْزَاب اَللّٰھُمَّ
اهْزِمْهُمْ وانصرنا عليهم وَزلزلْهُمْ

और इसी प्रकार यह दुआ की

يَاصَرِيْخَ الْمَكْرُوْبِيْنَ يَامُجِيْب الْمُضْطَرِّيْنَ اكْشِفْ
هَمِّىْ وَغَمِّىْ وَكِرْبِىْ فَاِنَّكَ تَرٰى مَانزل بِى وَ بَاَصْحَالِىْ

हे अल्लाह ! जिसने मुझ पर क़ुर्आन करीम उतारा है, जो अपने बन्दों से अति शीघ्र हिसाब ले सकता है यह गिरोह जो

संगठित होकर आए हैं उन्हें पराजित कर दे। अल्लाह! मैं पुनः प्रार्थना करता हूँ कि तू उन्हें पराजित कर तथा हमें विजय प्रदान कर तथा उन के इरादों को छिन्न-भिन्न कर दे, हे विवश लोगों की पुकार सुनने वाले, हे व्याकुल लोगों की गुहार सुनने वाले! मेरी व्याकुलता और चिन्ता का निवारण कर, क्योंकि तू उन संकटों को जानता है जिनसे मैं और मेरे साथियों का सामना है।

मुनाफिकों तथा मोमनों का स्वरूप

इस अवसर पर पाखंडी (मुनाफ़िक़) तो इतने घबरा गए कि जातिगत स्वाभिमान, अपने नगर, अपनी स्त्रियों और बच्चों की सुरक्षा का विचार तक उनके हृदयों से निकल गया परन्तु वे अपनी जाति के सामने अपमानित भी नहीं होना चाहते थे, इसलिए उन्होंने बहाने बना कर सेना से पलायन का उपाय सोचा। क़ुरआन करीम में आता है

وَيَسْتَاْذِنُ فَرِيْقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُوْلُوْنَ اِنَّ بُيُوْتَنَا
عَوْرَةٌ ۛ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ ۚ اِنْ يُّرِيْدُوْنَ اِلَّا فِرَارًا

अर्थात उनमें से एक गिरोह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया और आप से आज्ञा मांगी कि उन्हें रणभूमि से वापस जाने की आज्ञा प्रदान की जाए; क्योंकि उन्होंने कहा (अब यहूदी भी विरोधी हो गए हैं और उस ओर से सुरक्षा का कोई साधन भी नहीं) हमारे घर उस क्षेत्र की ओर से असुरक्षित हैं (अतः हमें आज्ञा दीजिए कि हम जा कर अपने घरों की सुरक्षा करें) परन्तु उन का यह कहना कि उनके घर असुरक्षित हैं बिल्कुल ग़लत है, वे घर असुरक्षित नहीं हैं (क्योंकि ख़ुदा तआला मदीने की सुरक्षा के लिए ख़ड़ा है) वे तो केवल युद्ध से भयभीत होकर युद्ध भूमि से भागना चाहते हैं। उस समय मुसलमानों की जो दशा थी उस का चित्र क़ुरआन करीम ने यों खींचा है।

اِذْ جَآءُوْكُمْ مِّنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ اَسْفَلَ مِنْكُمْ
وَاِذْ زَاغَتِ الْاَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ
وَتَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ الظُّنُوْنَا ۝ هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ
وَزُلْزِلُوْا زِلْزَالًا شَدِيْدًا ۝ وَاِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ
وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ
اِلَّا غُرُوْرًا ۝ وَاِذْ قَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ يٰۤاَهْلَ يَثْرِبَ

لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوْا۔

अर्थात याद तो करो! जब तुम पर सेना चढ़ कर आ गई तुम्हारी ऊपरी ओर से भी और नीचे की ओर से भी अर्थात नीचे की ओर से काफ़िर और ऊपर की ओर से यहूद, जब कि आँखें टेढ़ी होने लगीं और हृदय उछल-उछल कर कँठ तक आने लगे और तुम से कई लोगों के हृदयों में ख़ुदा के सम्बन्ध में अशुभ धारणाएं उत्पन्न होने लग गईं। उस समय मोमिनों के ईमान की परीक्षा ली गई तथा मोमिनों को पूर्णतया झंझोड़ कर रख दिया तथा स्मरण करो ! जबकि पाखण्डी (मुनाफ़िक़) और वे लोग जो मानसिक रोगी थे उन्होंने यह कहना आरम्भ किया अल्लाह और उसके रसूल ने हम से झूठे वादे किए थे और स्मरण करो ! जब उनमें से एक गिरोह इस सीमा तक पहुँच गया कि उन्होंने मोमिनों के पास भी जा-जा कर कहना आरम्भ कर दिया कि तुम्हें अब कोई सुरक्षा की चौकी या क़िला बचा नहीं सकता। अतः यहां से भाग जाओ। मोमिनों के बारे में फ़रमाता है

وَلَمَّا رَاَ الْمُؤْمِنُوْنَ الْاَحْزَابَ۔ قَالُوْا هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَصَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ۔ وَمَا زَادَهُمْ اِلَّآ اِيْمَانًا وَّتَسْلِيْمًا○ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ۔ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ۔ وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا○

अर्थात कपटी और कमज़ोर ईमान वालों की तुलना में मोमिनों की दशा यह थी कि जब उन्होंने शत्रु की यह विशाल सेना देखी तो उन्होंने कहा कि इस सेना के बारे में तो अल्लाह तआला और उस के रसूल ने हमें पहले से ही सूचना दे रखी थी। इस सेना का आक्रमण तो अल्लाह और उसके रसूल की सच्चाई का प्रमाण है। यह विशाल सेना उनके विश्वास को विचलित न कर सकी अपितु ईमान और श्रद्धा में मुसलमान और भी प्रगति कर गए। मोमिनों की दशा तो यह है कि उन्होंने अल्लाह से जो प्रण किया था उसे पूर्णतया निबाह रहे हैं। अतः कुछ तो ऐसे हैं जिन्होंने अपने प्राणों का बलिदान देकर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लिया तथा कुछ ऐसे हैं कि जिन्हें प्राण देने का अवसर तो प्राप्त नहीं हुआ परन्तु वे हर समय इस बात की प्रतीक्षा में रहते हैं कि उन्हें ख़ुदा के मार्ग में प्राण देने का अवसर प्राप्त हो तो वे प्राण दे दें। उन्होंने प्रारम्भ से ख़ुदा तआला से जो प्रण किया था उसे पूर्ण कर रहे हैं।

(शेष...)

Prop. Md. Mustafa

Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक

BHARAT BATTERIES & AUTO ELECTRICALS

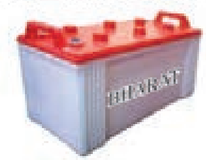

Mfrs. of : BHARAT BATTERY & BHARAT PLATES

Spl. in : All kinds of Battery Re-build & All Vehicles Automobiles, Electrical Job work undertaken

Opp. S. B. H., B. B. Road, Shahpur-585 223, Distt. Yadgir, Karnataka.

Ph : 08479-240269, Cell: 09845924940, 09986253320

जमाअत अहमदिय्या का परिचय

(मौलाना मुहम्मद करीमुद्दीन साहिब शाहिद, क़ादियान)

जमाअत अहमदिय्या वर्तमान युग में हज़रत इमाम महदी व मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा संस्थापित उस जमाअत का नाम है जो पूर्ण रूप से धार्मिक एवं इलाही तहरीक है। और जिसका राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं है। इस जमाअत को स्थापित करने का उद्देश्य यह है कि नाम के मुसलमानों को सच्चे मुसलमान बना कर उन में ठीक इस्लामी आत्मा पैदा की जाए और उन में इस्लामी प्रणाली को जारी किया जाए अर्थात उन के द्वारा धर्म को एक नई ज़िन्दगी मिले और शरीअत को स्थापित किया जाए। हाँ यह वही जमाअत है जिसके बारे में क़ुरआन शरीफ़ ने ''व आख़रीना मिन्हुम् लम्मा यल्हक़ू बिहिम'' (सूर: अल-जुमअ: : 4) अर्थात और इनके सिवा एक दूसरी जाति के लोगों में भी यह इस को भेजेगा जो अभी तक इन से नहीं मिली कह कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पुनरावरण में इस्लाम के पुर्नात्थान को स्थापित करने का बीड़ा उठाने वाली जमाअत और पवित्र क़ुरआन की आयत ''लियुज़्हिराहू अलद्दीने कुल्लेही'' (अस्सफ़ : 10) अर्थात समस्त धर्मों पर प्रभुत्व प्रदान करे, के अनुसार इस्लाम के प्रचार को मज़बूत, संगठित और व्यवस्थित बुनियादों पर स्थापित करके इस्लाम की विजय यात्रा को पूरा करने वाली जमाअत कहा है। और ख़ुदा के फ़ज़ल से इस जमाअत ने अपने जीवन के 106 वर्षीय युग में हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम और आपके पश्चात आपके पवित्र ख़लीफ़ाओं के पवित्र और कुशल नेतृत्व में विरोधियों और शत्रुओं के घोर विरोध, शत्रुता एवं रुकावट के होते हुए भी इस्लाम की विजय यात्रा को इस सीमा तक सफल बनाया है कि विश्व में चारों ओर न केवल अहमदिय्यत को प्रसिद्धि प्राप्त है बल्कि सफल व सरगरम प्रचार केन्द्र व मस्जिदें, स्कूल व कॉलज तथा हस्पताल स्थापित हैं, और क़ादियान की बस्ती से उठने वाली हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम की वह अकेली आवाज़ जिसे विरोधियों ने दबा देना चाहा था आज सारे संसार में एक करोड़ से अधिक अहमदी मुसलमानों के दिल की धड़कन बन कर धड़क रही है और आज हम बड़े गर्व से यह कह सकते हैं कि अहमदिय्यत पर सूर्य अस्त नहीं होता और जमाअत अहमदिय्या के द्वारा इस्लाम की विजय की यह महान यात्रा इस रूप में जारी है कि हमारे इमाम सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस (तीसरे) रहेमहुल्लाहो तआला) के फरमान के अनुसार जमाअत अहमदिय्या के जीवन की दूसरी शताब्दी इन्शाल्लाह इस्लाम की विजय की शताब्दी होगी जिसका स्वागत करने की तैयारी में हम व्यस्त हैं। (दूसरी सदी का शानदार स्वागत हम कर चुके हैं - अनुवादक)

जमाअत अहमदिय्या का उद्देश्य

परन्तु जमाअत अहमदिय्या की यह उन्नति, इस्लाम की इस विजय यात्रा के महान कार्यक्रम

और वास्तविक इस्लामी समाज की स्थापना, हमारे मुसलमान विद्वानों को एक आँख ना भाई और बजाए इसके कि वे इस धार्मिक जमाअत के साथ मिल कर इस्लाम के प्रचार के कर्त्तव्य को संगठित रूप से पूरा करते, अपनी अयोग्यता एवं स्वार्थ पर पर्दा डालने के लिए इस शुद्ध इस्लामी जमाअत को इस्लाम की सीमा रेखा से निकालने का फैसला करके काफिर घोषित कर दिया और मुस्लिम वर्ग में इस जमाअत के विरुद्ध यह मिथ्या विचार फैलाए कि इस जमाअत का इस्लाम से कोई सम्बन्ध नहीं है। यह इस्लाम के समान एक अन्य धर्म है और यह एक बुनियादी और नई मिल्लत है। जबकि यह बात हक़ीक़त और जमाअत के सिद्धांतों के सरासर विरुद्ध, ग़लत और आधारहीन आरोप है। ऐसा करके उन विद्वानों ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इस फ़रमान और इस भविष्यवाणी को सत्य प्रमाणित कर दिया है कि :-

'उलमाओहुम् शर्रुन् मिन् तहता अदीमिस्समाए'

(मिश्कात)

अर्थात 'उन के औपचारिक और तथा-कथित मुस्लिम विद्वान आकाश के नीचे सबसे अधिक बुरे लोग होंगे। वह लड़ाई व फ़ितने का स्रोत होंगे।'

इसीलिए अल्लामा इक़बाल ने कहा है कि:-

दीने मोमिन फ़िकरो तदबीरे जिहाद
दीने मुल्ला फी सबीलिल्लाह फ़साद

अत: अहमदिय्यत कोई नया धर्म या मज़हब या मिल्लत हरगिज़ नहीं है। बल्कि यह हक़ीक़ी इस्लाम ही का दूसरा नाम है। और हर अहमदी के दिल और नस-नस में इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और क़ुर्आन करीम का प्रेम और इश्क़ रचा हुआ है। लीजिए हमारे दिल की आवाज़ जमाअत के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम के शब्दों में पढ़िए। आप अपनी किताब 'अय्यामुस्सुल्ह' के पृष्ठ 86-87 में फ़रमाते हैं :-

"याद रहे कि हमारे विरोधी, लोगों को जितनी घृणा दिला कर हमें काफ़िर और बेईमान ठहराते हैं और आम मुसलमानों को यह विश्वास दिलाना चाहते हैं कि यह आदमी तथा इसकी जमाअत इस्लाम के सिद्धान्तों और धर्म के नियमों से दूर है यह उन ईर्ष्यापूर्ण मौलवीयों के वे झूठ हैं कि जब तक किसी के दिल में एक कण के बराबर ईश्वर का डर हो, ऐसे झूठ नहीं बोल सकता, जिन पाँच बातों पर इस्लाम का आधार है, वे हमारे सिद्धान्त हैं। और जिस ख़ुदा के कलाम अर्थात क़ुरआन को पंजा मारने का हुक्म है हम उसको पंजा (अनुकरण) मार रहे हैं। और फ़ारूक़ रज़ियल्लाह

तआला अन्हो की तरह हमारी ज़बान पर 'हस्बुना किताबुल्लाहि' और हज़रत आइशा रज़ियल्लाह तआला अन्हा की तरह, जब हदीस और क़ुर्आन में मतभेद पैदा हो तो क़ुर्आन को हम श्रेष्ठता देते हैं और विशेष कर क़िस्सों में जो सामूहिक रूप से रद्द करने के योग्य भी नहीं हैं। और हम इस बात पर ईमान लाते हैं कि ख़ुदा तआला के सिवा कोई पूजनीय नहीं है और सय्यदना हज़रत मुहममद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसके रसूल और ख़ातमअलअम्बिया हैं और हम ईमान लाते हैं कि वास्तव में फ़रिश्ते हैं, क़यामत सच है, और हिसाब किताब का दिन सच और जन्नत (स्वर्ग) सच और जहन्नुम (नरक) सच है। और हम ईमान लाते हैं कि जो कुछ अल्लाह तआला ने क़ुर्आन शरीफ में फ़रमाया है और जो कुछ हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है, वह सब उपरोक्त बयान के अनुसार सच है। और हम ईमान लाते हैं कि जो व्यक्ति इस शरीअते इस्लाम (इस्लामी सिद्धान्त) में से एक अंश भी कम करे या एक अंश अधिक करे या कर्त्तव्यों का पालन न करने और नाजायज़ बातों को जायज़ बनाने की नींव डाले वह बेईमान और इस्लाम से दूर हटने वाला है। और हम अपनी जमाअत को नसीहत करते हैं कि वह सच्चे दिल से इस क़लिमा तय्यबा पर ईमान रखे कि :- ''ला इलाहा इल्लल्लाहो मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह'' (अर्थात् अल्लाह तआला के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं, हज़रत मुहम्मद (मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) अल्लाह तआला के रसूल (अवतार) हैं। और इसी पर मरें, और तमाम रसूल व अवतार और तमाम किताबें जिनकी सच्चाई क़ुर्आन शरीफ से स्पष्ट है उन सब पर ईमान लावें। और 'रोज़ा' (उपवास) और 'नमाज़' और 'ज़कात' और 'हज' और ख़ुदा तआला और उस के रसूल के नियुक्त सारे कर्त्तव्यों को कर्त्तव्य समझ कर और सारी रोकी गई बातों से रुक कर ठीक-ठीक इस्लाम पर क़ायम हों। अत:वे सारी बातें जिन पर पुराने बुज़ुर्ग सम्पूर्ण रूप से सहमत थे और वे उन्हें कार्य रूप भी देते थे और वे बातें जो अहले सुन्नत की सामूहिक दृष्टि में इस्लाम कहलाती हैं उन सब को मानना फ़र्ज़ है। और हम आकाश और धरती को इस बात पर साक्षी बनाते हैं कि यही हमारा धर्म है।''

इसी प्रकार आपने फ़रमाया :-

''हम तो रखते हैं मुसलमानों का दीं
दिल से हैं ख़ुद्दामे ख़त्मुल मुरसलीं।
शिरक और बिदअत से हम बेज़ार हैं
ख़ाके राहे अहमदे मुख़तार हैं।
सारे हुकमों पर हमें ईमान है
जानो दिल इस राह पर क़ुर्बान हैं।''

****

अहमदिया सम्प्रदाय भारतवासियों की दृष्टि में

शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री

भाग - 6

प्रिय पाठको! हिन्दुस्तान टाईम्ज़ के पत्रकार श्रीमान जसवंत सिंघ ने 25 दिसम्बर 1951 ई. के समाचार पत्र में जमाअत अहमदिय्या के बारे में एक निबंध लिख कर प्रकाशित किया जो अंग्रेज़ी भाषा में था उसका उर्दू अनुवाद 7 मार्च 1952 ई. के उर्दू बदर पृष्ठ नं. 4 पर प्रकाशित हुआ, उसी निबंध का हिन्दी अनुवाद पाठकों के सामने प्रस्तुत किया जा रहा है। जमाअत के लोगों से निवेदन है कि वह खुद भी इसको पढ़े और अपने मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम भाईयों को भी इसके बारे में बताएँ। (सम्पादक)

क़ादियान में अहमदिय्या सम्प्रदाय के मुस्लमानों का पवित्र धार्मिक केन्द्र है आने वाले क्रिसमस के सप्ताह में क़ादियान धार्मिक भाषणों से गूंजेंगा इस अवसर पर आठ सौ श्रद्धालु जिन में से लगभग एक सौ पाकिस्तान से होंगे और दूसरे भारत के विभिन्न क्षेत्रों से जलसा सालाना क़ादियान में शामिल होने के लिए एकत्रित होंगे। इस तरह का सम्मेलन आज से साठ वर्ष पूर्व हुआ जिस को हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहब संस्थापक जमाअत अहमदिय्या ने आरम्भ किया था।

देश के विभाजन से पहले इस स्थान पर संसार के विभिन्न क्षेत्रों से श्रद्धालु इकट्ठा होते थे लेकिन विभाजन के पश्चात इस की संख्या कुछ सौ रह गई इसका सबसे बड़ा कारण विभाजन के समय लोगों का भारत से पाकिस्तान चले जाना है इस सम्मेलन में विभिन्न धार्मिक व सामाजिक विषयों पर भाषण होंगे।

अहमदिय्या जमाअत की नींव सन् 1889 ई. में मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी ने क़ादियान में रखी थी आप मुग़ल वंश से सम्बंध रखते थे जो बाबर के शासन काल में समरकंद से भारत आया हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद के पूर्वजों में से सर्वप्रथम जो भारत आए उन का नाम मिर्ज़ा हादी बेग़ था उनको क़ादियान के आस-पास के सत्तर गाँव का मजिस्ट्रेट नियुक्त किया गया। कहा जाता है कि क़ादियान की नींव उन्होंने ही रखी थी। इस कस्बे का प्राचीन नाम इस्लामपुर काज़ी था बाद में परिवर्तित होते होते क़ादियान बन गया। क़ादियान पंजाब में एक छोटा सा गांव है जो बटाला से अमृतसर -पठानकोट लाईन पर एक रेलवे स्टेशन से ग्यारह मील उत्तरी पूर्व में स्थित है।

नबी अथवा अवतार दो प्रकार के माने जाते हैं प्रथम वह जो शरीअत (धार्मिक कानून) लेकर आते हैं। दूसरे वह जो शरीअत (धार्मिक कानून) की सही व्याख्या करने, उस को संसार में प्रचलित करवाने और उन धार्मिक बुराईयों व गन्दगियों को दूर करने के लिए जो धर्म में लम्बा समय गुज़रने के कारण प्रवेश कर

जाती हैं, आते हैं। हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहब जिन्होंने अहमदियत की नींव रखी दूसरे प्रकार के नबी होने का दावा किया था आपने इस बात की घोषणा की कि आप ईसाईयों के लिए मसीह मौऊद मुसलमानों के लिए महदी, हिन्दुओं के लिए कल्कि अवतार और ज़रतश्तियों के लिए यसुद दर वहमी हैं आपने यह दावा किया कि आप सम्पूर्ण मानवजाति के लिए मार्गदर्शन करने वाले अवतार हैं और आप के आने का उद्देश्य सम्पूर्ण मानवजाती को एक ही धर्म में एकत्रित करना है। आप के अनुयायी इस दावे के प्रमाण में बहुत ही रोचक तर्क देते हैं वह कहते हैं कि आप ज़रतश्तियों के लिए मौऊद हैं क्योंकि आप फारसी वंशज में से हैं आप भारतीय होने के कारण हिन्दुओं के अवतार हैं इसी तरह क्यों कि आप इस्लाम धर्म को मानने वाले हैं इसलिए मुसलमानों के महदी हैं और क्योंकि आप ईसाई सत्ता के समय पैदा हुए इसलिए आप ईसाईयों के भी मौऊद हैं।

संस्थापक जमाअत अहमदिया के प्रादुर्भाव (आने का) उद्देश्य आप के अपने शब्दों में निम्नलिखित हैं।

वह कार्य जिसके लिए ख़ुदा ने मुझे नियुक्त किया वह यह है कि ख़ुदा में और उसकी सृष्टि (मानवजाती) के सम्बन्धों में जो दूरी उत्पन्न हो गई है इसको दूर करके प्रेम व श्रद्धा के सम्बंध को पुन: स्थापित करना और सत्य को प्रकट करके धार्मिक लड़ाईयों को समाप्त करके मैत्री की नींव रखूँ और धार्मिक सच्चाईयाँ जो संसार की आँख से ओझल हो गई हैं उन को स्पष्ट कर दूँ। और वह अध्यात्म जो नफसानी अन्धेरों के नीचे दब गया है उसका आदर्श दिखाऊँ और खुदाई शक्तियाँ जो मनुष्य के भीतर प्रवेश करके ध्यान अथवा दुआ के द्वारा प्रकट होती हैं उन शक्तियों के नमूने (उदाहरण) लोगों के सामने प्रस्तुत करूँ।

और सब से अधिक यह कि वह शुद्ध और चमकती हुई तौहीद (एकेश्वरवाद) जो प्रत्येक प्रकार की मिलावट से रहित है जो अब समाप्त हो चुकी है उस का स्थाई पौधा पुन: संसार में लगाऊँ।

आप ने फर्माया कि आप का कर्त्तव्य है कि (1) संसार की सम्पूर्ण जातियों के समक्ष इस्लाम की सत्यता को प्रमाणित करूँ। (2) सम्पूर्ण संसार के समक्ष इस्लाम की मूल शिक्षा जो सच्चाई और आध्यात्म से भरी हुई है, पेश करूँ। (3) वह लोग जो ईमान के नूर की ज्योति से प्रकाशित होना चाहते हैं उन्हें ईमान के नूर (प्रकाश) से रौशन करूँ।

हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब के देहान्त के पश्चात हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब आप के प्रथम खलीफा नियुक्त हुए हज़रत मौलवी साहिब के देहान्त के पश्चात (वर्तमान खलीफा) हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन मेहमूद अहमद साहिब जो कि हज़रत मिर्ज़ा साहब के पुत्र हैं ख़लीफ़ा नियुक्त हुए।

वर्तमान ख़लीफ़ा ने अहमदिय्यत व इस्लाम को एक रूप घोषित किया और फर्माया कि अहमदियत से तात्पर्य वह सच्चा इस्लाम है जो इस युग के इमाम ने संसार के समक्ष पेश किया इस की नींव पवित्र क़ुरआन अर्थात इस्लामी शरीअत (कानून) पर है लेकिन अहमदियत वर्तमान इस्लामी सम्प्रदायों की मान्यताओं और शिक्षा के भिन्न है अहमदियत के द्वारा बहुत सी सच्चाईयाँ पुन: प्रकट हुई जो कि लम्बा समय गुज़रने के कारण ओझल

हो गई थीं और वर्तमान युग की आवश्यताओं व विशेष स्थिति अनुसार बहुत सी नई हकीकतें सामने आईं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हकाईक जिन्होंने संसार के उच्च दिमागों (वाले) और धार्मिक लोगों को उन गुप्त अध्यात्मिक खज़ानों से परिपूर्ण कर दिया जो पवित्र क़ुरआन में पाए जाते थे।'' जमाअत अहमदिय्या एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था है। क्योंकि इसकी शाखें यूरोप, अमेरिका तथा एशिया, अफ्रीका के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में फैली हुई हैं प्रत्येक स्थान पर इस जमाअत को मानने वाले और इसकी विशेष शिक्षा को फैलाने व प्रचार का कार्य कर रहे हैं।

प्राचीन विचारों के मुसलमानों की मान्यताओं के विरुद्ध मुसलमानों की यह जमाअत उन विभिन्नताओं को जो विभिन्न जातियों और विभिन्न धर्मों में पाई जाती हैं स्वीकार करके यह शिक्षा देती है कि उन विभिन्नताओं को बलात या शक्ति से नहीं अपितु सही विचार व उपदेशों और आपसी समझ बूझ से दूर किया जाए। अहमदिया जमाअत की मान्यता है कि वह सम्पूर्ण धर्म जो अपने आप को परमेश्वर की तरफ होने का दावा करते हैं और एक लम्बे समय से संसार में स्थापित हैं वह नि:सन्देह सच्चे और ख़ुदा की तरफ से हैं। सम्भव है कि एक लम्बा समय बीतने के कारण उन धर्मों की शिक्षाओं में त्रुटियाँ उत्पन्न हो गई हों और उन की आध्यात्मिक शक्ति दुर्लभ हो गई हो। अहमदिय्यत की शिक्षा के अनुसार धर्म में बलात व शक्ति का उपयोग उचित नहीं हैं अपनी मान्यता व कर्म करने की स्वतंत्रता अहमदियों के निकट धर्म का बुनियादी अधिकार है और जिहाद की विचारधारा जो दूसरे मुसलमानों ने अपनाई है जिसके अनुसार धर्म के नाम पर बलात व शक्ति का उपयोग उचित है अहमदिय्यत ऐसे जिहाद के विरुद्ध है।

समाज में रहने के बारे में जमाअत अहमदिय्या का यह नियम है कि अहमदी जिस देश अथवा जिस क्षेत्र में भी रहते हैं वहाँ की स्थापित सत्ता के प्रति स्वामीभक्त होते हैं। और किसी भी स्थिति में देश के कानून का उल्लंघन नही करते यह बात इनके बुनियादी नियम व मान्यता में शामिल है कि अहमदी सरकार के सहायक बनें और किसी स्थिति में भी हड़ताल, अथवा सरकार के विरोध में या किसी भी तरह के ग़ैर कानूनी कार्य में भाग न लें।

1947 ई. के आतंक के समय हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब अपने एक हज़ार अनुयायीओं के साथ पाकिस्तान चले गए आप अपने पीछे लगभग तीन सौ श्रद्धालु अनुयायी केन्द्र (क़ादियान) की सुरक्षा हेतु छोड़ गए। पाकिस्तान में पहले आपने अस्थाई केन्द्र लाहौर स्थापित किया और बाद में रब्वा चले गए अब तक भी क़ादियान मुख्य केन्द्र है। क़ादियान में सदर अंजुमन अहमदिय्या अपनी 125 शाखों की जो भारत के विभिन्न भागों में फैली हुई हैं। देख भाल करती है चीफ सैक्रेटरी जो 'नाज़िर आला' कहलाते हैं अंजुमन (जमाअत) में प्रेज़ीडेंट के रूप में अपने कर्त्तव्य निभाते हैं और विभिन्न नाज़िरों (अधिकारीयों) के सहयोग से जमाअत के प्रबंध व सुरक्षा की देखरेख करते हैं जमाअत में विभिन्न प्रकार के होने वाले आर्थिक खर्चों को लोगों द्वारा दिए गए फंड (दान) से पूरा किया जाता है।

(शेष...)

हज़रत मुस्लेह मौऊद का बचपन

(सय्यदा हिब्बतुल शकूर, क़ादियान)

सय्यदना हज़रत मिर्जा बशीरुद्दीन महमूद अहमद खलीफ़तुल मसीह अस्सानी रज़िअल्लाहो अन्हो का बचपन हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की विशेष दयालु नज़र और प्रशिक्षण में गुज़रा । इसलिए हम सब बच्चों के लिए आप के बचपन में हमारे प्रशिक्षण के लिए महत्वपूर्ण नसीहतें मिलेंगी। जिनसे लाभ उठाते हुए हमें अपने जीवन में पालन करने की आवश्यकता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और हज़रत अम्मा जान रज़िअल्लाहु अन्हा जहाँ बहुत प्यार और प्रेम के साथ पालन-पोषण करते थे वहीं अपने प्रशिक्षण का विशेष ध्यान भी रखते थे। ताकि बचपन से ही इस्लामी और आध्यात्मिक वातावरण में आप का जीवन रंगीन हो सके और ख़ुदा के वादों और भविष्यवाणियों के अनुसार भविष्य में आप पर लागू होनेवाली ज़िम्मेदारियों के लिए प्रशिक्षण हो और आप सारी दुनिया के लिए एक धार्मिक नेता साबित हों। इसलिए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के बचपन की कुछ घटनाऐं पाठकों की सेवा में प्रस्तुत हैं।

1) मुझे बचपन में ही यह पाठ पढ़ाया गया था। मैं बचपन में एक बार एक तोता शिकार करके लाया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उसे देखकर कहा। महमूद! इसका मांस हराम तो नहीं। मगर अल्लाह तआला ने हर जानवर भोजन के लिए ही पैदा नहीं किया। कुछ सुंदर जानवर देखने के लिए हैं कि उन्हें देखकर आंखें राहत पाएँ। कुछ जानवरों को मधुर आवाज़ दी है कि उनकी आवाज़ सुनकर कानों को सुख मिलता है।

2) हुज़ूर कि प्रशिक्षण की एक और घटना इस प्रकार है।

``मदरसा तालिमुल इस्लाम क़ादियान के समारोह 'तशहीज़ुल अज़हान' में एक बार यह ..... लेख छात्रों को दिया गया कि `` ज्ञान और धन का मुक़ाबिला करो`` साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब ने इस पर बहुत विचार विमर्श और कुछ सहपाठियों से भी चर्चा की। मगर जब आपके पवित्र हृदय ने ज्ञान और धन में से किसी को पर्याप्त और निश्चित रूप से बेहतर होने का फ़तवा न दिया तो आप अपने पिताजी वर्तमान इमाम के साथ खाना खाते हुए मियां बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु से इस तरह संबोधित हुए।

महमूद अहमद। बशीर तुम बता सकते हो कि ज्ञान अच्छा है या धन?

मियां बशीर अहमद साहिब ने तो क्या जवाब देना था। वर्तमान इमाम सुनकर फ़रमाने लगे... बेटा महमूद! तौबा करो तौबा करो। न ज्ञान अच्छा है न धन। भगवान की कृपा अच्छी है।

3) हज़रत शेख याक़ूब अली साहब इरफ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं।

एक बार मियां (हज़रत खलीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु) दालान के दरवाज़े बंद

करके चिड़िया पकड़ रहे थे कि हज़रत साहिब ने शुक्रवार की नमाज़ के लिए बाहर जाते हुए उन्हें देख लिया और कहा।

``मियां घर कि चिड़िया नहीं पकड़ा करते। जिस व्यक्ति में दया नहीं उस में विश्वास नहीं ``

4) वर्णन मिर्ज़ा मोहम्मद इस्माईल बैग साहिब रिवायत करते हैं कि एक बार हुज़ूर अलैहिस्सलाम साथीयों के साथ सैर को गए। मार्ग के एक तरफ़ कीकर का एक पेड़ गिरा पड़ा था। कुछ दोस्तों ने उसकी शाखाओं से मिसवाकें बनालीं। हुज़ूर के साथ शायद हज़रत खलीफ़ा सानी भी थे। छोटी उम्र थी एक मिस्वाक किसी ने आपको भी दी और उन्होंने बे-झिझक बचपन की वजह से एक दो बार यह भी कह दिया कि अब्बा मिस्वाक ले लें। मगर हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने मुस्कुराते हुए कहा कि पहले यह तो बतलायें कि किसकी अनुमति से यह मिसवाकें प्राप्त हुई हैं। यह बात सुनते ही सबने मिसवाकें ज़मीन पर फेंक दीं।

5) हज़रत खलीफ़तुलमसीहु सानी बचपन में टोपी पहना करते थे। उसी आदत के अनुसार एक बार ईद के दिन आप टोपी पहने हुए थे। तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आप को देखकर कहा। मियाँ तुम ने ईद के दिन भी टोपी पहनी है। आपने उसी समय टोपी उतार दी और पगड़ी बांध ली। और कुछ समय के बाद टोपी का प्रयोग हमेशा के लिए छोड़ दिया।

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु को बाल्यावस्था से ही हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से बेहद प्यार और श्रद्धा थी। और यह विशेषता काफ़ी तौर पर नज़र आती थी। अत: आप रज़ियल्लाहु अन्हु स्वयं कहते हैं। `` हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक बार रात में आंगन में सो रहे थे कि बादल ज़ोर से घिर आये और बिजली बहुत ज़ोर से कड़की। वह कड़क इतनी तीव्र थी कि हर व्यक्ति ने यही समझा कि मानो बिल्कुल उसके पास गिरी है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जो आंगन में सो रहे थे चारपाई से उठकर कक्ष की ओर जाने लगे दरवाज़े के पास पहुंचे कि बिजली ज़ोर से कड़की। मैं उस समय आप के पीछे था। मैंने उस समय अपने दोनों हाथ उठाकर आप के सिर पर रख दिए। इस विचार से कि अगर बिजली गिरे तो मुझ पर गिरे आप पर न गिरे। अब यह एक अज्ञानता की बात थी बिजलियां जो ख़ुदा के हाथ में हैं उसका संबंध मेरी तुलना आप से अधिक था। बल्कि आप के कारण मैं भी बिजली से बच सकता था। और यह भी पता है कि हाथों से बिजली को रोका नहीं जा सकता। मगर प्रेम की वजह से मुझे इन बातों में से कोई भी बात याद न रही। अत्यधिक प्रेम के कारण यह सब बातें मेरी नज़र से ओझल हो गई और मैंने अपने आप को बलिदान के लिए पेश कर दिया। `` ज़ाहिर है कि आप को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से यह प्यार पिता होने के कारण से नहीं बल्कि मामूर मिनल्लाह होने के कारण से मिला। और इसी लिए केवल आस्था के कारण प्रकृतिक रूप से हुज़ूर को बचाने के लिए हाथ उठाए।

(तारीखे अहमदियत भाग 4 पृष्ठ 15,16)

अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हमें सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के बचपन की इन घटनाओं से प्राप्त होने वाली शिक्षाप्रद बातों का पालन करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे। आमीन!

पानी उबाल कर पीएँ

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि. ने फर्माया :-

हमारे देश में संक्रामक बिमारियों के कीटाणुओं रहित साफ पानी का प्रत्येक क्षेत्र में प्रबन्ध नहीं है। बल्कि अधिकतर क्षेत्रों में नहीं है। इस तरह की बिमारियों से बचाव के लिए सब से अच्छा उपाय यह है कि आप पानी उबाल कर प्रयोग करें जब तक कोई और उपाय न आए यही करते रहें। अगर आप पानी उबाल कर पियें तो आप पेट व आंतड़ियों की कई बिमारियों से सुरक्षित हो जाएँगे।... पानी उबालने से (अच्छे दो चार उबाले आ जाएँ तो) कीटाणु मर जाते हैं लेकिन अधिकतर लोगों को सादा पानी पीने की आदत है इसलिए जब आप पानी उबाल कर ठण्डा करके छोटे घड़े में रखेंगे तो बिल्कुल ठण्डा हो जाएगा लेकिन उस का स्वाद थोड़ा अलग होगा सम्भव है कि कुछ ज़मींदार कह दें कि यह क्या मुसीबत है इसे दूर फेंक दो इस तरह का विचार शुरू-शुरू में चीन के लोगों में भी आया था। उन्हें हम से पहले यह उपाय आया हालांकि हमें आना चाहिए था बहरहाल उन्होंने पानी में हरी चाय की पत्ती डाल दी इस से पानी में मोती जैसा रंग आ जाता है और उसका स्वाद भी अच्छा हो जाता है और उस में चाय का हल्का सा स्वाद आता है। अत: अब चीन के लोग यही हरी चाय का काहवा पीते हैं। मैंने एक रिसाले (पत्रिका) में पढ़ा था कि वहां (चीन में) पेट की बिमारी न के समान है। इसलिए आप लोग भी उबला पानी का प्रयोग करें। क्योंकि हम बिमार होकर अपना समय नष्ट करते हैं और अपने आप को परीक्षा में डालते हैं कि जीवन में कई पल ऐसे भी आ सकते हैं जिन में आप ख़ुद को नेकियों के कार्य करने से वंचित कर दें।''

...बहरहाल यह भी एक उपाय है और अल्लाह तआला ने प्रत्येक उपाय इसलिए बनाया है कि लोग उस से लाभ उठाएँ। आदेश तो केवल ख़ुदा का ही चलता है इस में कोई सन्देह नहीं लेकिन उसका यह भी आदेश है कि इस संसार में उपाय करो इसलिए मैं इस कहवे के रूप में गर्म पानी पीता हूँ।''

(अलफ़ज़ल इन्टरनेशनल 28 फरवरी 2014 ई., पृ. 4)

***

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नुरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) : 1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

तहरीक-ए-जदीद की दूसरी छमाही
जमाअत के श्रद्धालुओं से दर्दभरी अपील

जैसे कि जमाअत के लोगों को पता है कि तहरीक-ए-जदीद के वअदों का साल 1 नवम्बर से शुरू होकर 31 अक्तूबर को समाप्त होता है इसलिए इस वर्ष के छः महीने बीत चुके हैं हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस द्वारा किए गए तहरीक-ए-जदीद के 81 वें वर्ष के बा-बरकत एलान पर आधारित ख़ुत्बा जुम्अः 7 नवम्बर 2014 के अनुसार जमाअत के लोगों ने अपने वअदों में भरपूर बढ़ोतरी की है लेकिन छः महीने बीत जाने के पश्चात भी कुछ जमाअतों के वअदों के अनुसार वसूली बहुत कम हुई है जो कि चिन्ता का विषय है। याद रहे कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस द्वारा दिए गए टारगेट (लक्ष्य) को पूरा करने के लिए अब छः महीने को थोड़ा सा समय बचा है जबकि तहरीक-ए-जदीद के चन्दे को शीघ्र अदा करने के लिए तहरीक-ए-जदीद के संस्थापक हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि. ने ताकीदी उपदेश दिया है कि :-

''लोगों को कोशिश करनी चाहिए कि तहरीके जदीद का चंदा शीघ्र दिया जाए इसकी अदायगी वर्ष के अंत तक नहीं रहनी चाहिए एक दिन का सवाब (प्रतिफल) भी साधारण नहीं कि उस को छोड़ दिया जाए।'' (ख़िताब मज्लिस मशावरत, 12, फरवरी 1936)

फिर फ़र्माया :-

क्योंकि तहरीक-ए-जदीद को अपने कार्यों के लिए जल्द रूपए की अवश्यकता है सैक्ट्रीयों को हिदायत की जाती है कि रूपए एकत्रित न रखें बल्कि साथ के साथ (वकीलुल माल तहरीक-ए-जदीद) के नाम भिजवाते रहें।'' (पुस्तक माली कुर्बानी, पृ. 34)

जमाअतों को उनके वर्तमान वर्ष के वअदों और 30 अप्रैल तक वसूली की रिपोर्ट (स्थिति) डाक द्वारा भिजवाई जा रही है सारे उमरा, सदर साहब और तहरीक-ए-जदीद के सैक्रेट्रीयों से निवेदन है कि वे अपनी अपनी जमाअतों के बजट का निरिक्षण लेकर वअदों की पूरी वसूली के बारे में प्रभावी कार्यवाही करें और तहरीक-ए-जदीद के इन्सपैक्टरों की भी पूर्ण सहायता करें क्योंकि रमज़ान के पवित्र दिन अगले महीने से आरम्भ हो रहे हैं हमें चाहिए किहम अपने वाजिबात (जो हम पर वाजिब हैं) की पूर्ण अदायगी करके हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला की दुआओं से हिस्सा लेने वाले बनें।

अल्लाह तआला हम सब की कोशिशें स्वीकार करो! जमाअत के सारे श्रद्धालुओं की छन सम्पत्ति में आश्चर्यजनक बरकत करे और उन पर अपने अनगिनत फ़ज़ल व बरकतें व रहमतें नाज़िल करे। (वकीलु-ल-माल तहरीक-ए-जदीद, क़ादियान)

नज़ारत नश्रो इशाअत क़ादियान की ओर से प्रकाशित कुछ नई पुस्तकों का परिचय

वे ऑफ दी सीकर्स

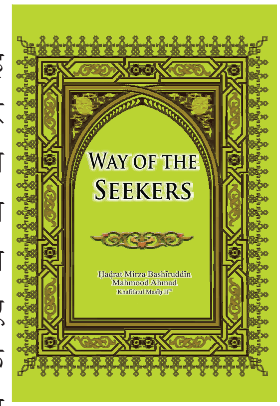

सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि. ने जलसा सालाना क़ादियान 1925 ई. के अवसर पर दो सार गर्भित ख़िताब फ़र्माए, जिस में आप ने अहमदियत के इतिहास का वर्णन किया और वह तरीके वर्णन किये जिन पर चलकर मनुष्य पापों से मुक्त हो जाता है और नफ़्स में अच्छाईयाँ पैदा हो जायें। इसमें औलाद की देख भाल (तरबियत) के भी उत्तम (बेहतरीन) तरीके वर्णन किये गए हैं। इसके अनेक उर्दू और अंग्रेज़ी अनुवाद के ऐडीशन प्रकाशित हो चुके हैं। नज़ारत नश्रो इशाअत ने अंग्रेज़ी अनुवाद प्रथम (पहली) बार बेहतरीन प्रिंटिंग के साथ प्रकाशित किया है जो 147 पृष्ठों पर आधारित है।

क्लेम्स ऑफ दी प्रोमिस्ड मसीह

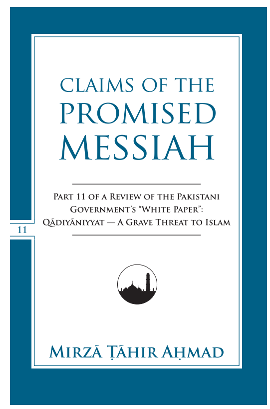

सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने रियासत (हुकुमत) पाकिस्तान के वाईट पेपर क़ादियानियत इस्लाम के लिए संगीन ख़तरा के जवाब में जो ख़ुत्बात वर्णन किये उनमें से एक ख़ुत्बः जुम्अः वर्णित 5 अप्रैल 1985 ई. में हज़रत मसीह मौऊद मेहदी अलैहिस्सलाम के दावा और आने के मक़सद पर क़ुरआन मजीद, अहादीस और गुज़रे हुए विद्वानों की बातों से विस्तार से रोशनी डाली। इस ख़ुत्बः का अंग्रेज़ी अनुवाद 'क्लेम्स ऑफ दी प्रोमिस्ड मसीह' के नाम से पुस्तक के रूप में 2007 ई. में लन्दन से प्रकाशित हुआ। नज़ारत नश्रो इशाअत क़ादियान ने ये पुस्तक पहली बार प्रकाशित किया है।

सालाना इज्तिमा मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया तथा अत्फालुल अहमदिया भारत की तारीखें

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सालाना इज्तिमा मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया तथा अत्फ़ालुल अहमदिया भारत के लिए दिनाँक 17, 18, 19 अक्तूबर (शनिवार, रविवार तथा सोमवार) की मंज़ूरी दी है।

समस्त ख़ुद्दाम तथा अत्फ़ाल इस रूहानी इज्तिमा में सम्मिलित होने के लिए अभी से तैय्यारी आरम्भ कर दें। (सदर मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया, भारत)

मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत की विभिन्न शाखाओं द्वारा आयोजित किए जाने वाले कार्यों के दृश्य

ख़ुद्दामुल अहमदिया मैंगलोर कर्नाटक के सदस्य ज़रूरतमंदों को भोजन बांटते हुए।

ख़ुद्दामुल अहमदिया हैदराबाद द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर का एक दृश्य

मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया क़ादियान (हलक़ा बाबुल अब्वाब) द्वारा आयोजित तब्लीग़ी स्टाल का एक दृश्य।

मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया ज़िला अजमेर राजस्थान द्वारा आयोजित वक़ारे अमल का एक दृश्य।

मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया ज़िला हैदराबाद द्वारा आयोजित वृक्षारोपण का एक दृश्य।

मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया बैंगलोर कर्नाटक द्वारा आयोजित वक़ारे अमल का एक दृश्य।

Regd. with the registrar of News Papers of India at PUNHI Number 1999/4052
Postal Licence Number GDP/019/2013-15

Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian

RAH-E-IMAN

E-Mail : rahe.imaan@gmail.com

Chairman : Rafiq Ahmad Beig

Editor : Shaikh Mujahid Ahmad Shastri — Mobile : 09915379255

Manager : Zubair Ahmad Tahir — Mobile : 09872189482

Vol : 17 **Issue : 05** **May : 2015**

कलाम

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम

जमालो हुस्ने कुरआँ नूरे जाने हर मुसल्माँ है
कमर है चान्द औरों का हमारा चान्द कुरआँ है
नज़ीर उसकी नहीं जमती नज़र में फ़िक्र कर देखा
भला क्यों कर न हो यक्ता कलामे पाक रहमाँ है
बहारे-जावेदाँ पैदा है उसकी हर इबारत में
न वो खूबी चमन में है, न उस सा कोई बुस्ताँ है
ख़ुदा के कौल से कौले बशर क्योंकर बराबर हो
वहाँ कुदरत यहाँ दरमान्दगी फर्के नुमायाँ है
बना सकता नहीं इक पाँव कीड़े का बशर हरगिज़
तो फिर क्यों कर बनाना नूरे हक का उस पे आसाँ है
ये कैसे पड़ गए दिल पर तुम्हारे जहल के पर्दे
ख़ता करते हो बाज़ आओ अगर कुछ खौफ़े यज़दाँ है
हमें कुछ कीं नहीं भाईयो ! नसीहत है ग़रीबाना
कोई जो पाक दिल होवे दिलो जाँ उस पे कुरबाँ है।

(दुर्रे समीन)